



1. जयपुर घराने का कथक: वीर रस और भ्रमरी (1920 के दशक की तस्वीर)।



2. दरबारी संगीत परंपरा: जयपुर-अतरौली घराना (19वीं सदी की पेंटिंग)।



3. डागर बंधु: ध्रुपद गायकी के संरक्षक (1960 के दशक की फोटो)।



4. पंडित जसराज: मेवाती घराने के शास्त्रीय गायक (पोट्रेट)।



5. पं. विश्व मोहन भट्ट और मोहन वीणा (1990 के दशक की तस्वीर)।



6. अल्लाह जिलाई बाई: मांड गायकी, 'केसरिया बालम' (पेंटिंग)।

SKPF-Wincompete Test Series 2026

पाठ्य सामग्री - राजस्थान कला एवं संस्कृति

टेस्ट 04 - राजस्थान कला एवं संस्कृति (भाग-2)

बिंदु 1: प्रदर्शन कला (Performing Arts)

अध्याय 1: शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य (कथक): जयपुर घराना और प्रमुख कलाकार

1. राजस्थान में शास्त्रीय नृत्य: कथक (जयपुर घराना)

कथक उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है और राजस्थान इसका एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

- **उद्भव एवं घराना:** कथक का सबसे प्राचीन और आदि घराना 'जयपुर घराना' माना जाता है।
- **प्रवर्तक:** इस घराने के प्रवर्तक **भानुजी** थे।
- **विशेषता:** जहाँ लखनऊ घराना अपनी 'नज़ाकत' और 'भाव' के लिए प्रसिद्ध है, वहीं जयपुर घराना अपनी '**वीर रस**', '**भ्रमरी**' (चक्कर) और '**द्रुत लय**' (लयकारी) के लिए जाना जाता है। इसमें 'पद संचालन' (Footwork) पर विशेष बल दिया जाता है।
- **धार्मिक आधार:** जयपुर घराना मुख्य रूप से **हिंदू परंपराओं** और भक्ति से ओतप्रोत है।

प्रमुख कलाकार:

1. **पंडित बिरजू महाराज:** यद्यपि इनका संबंध लखनऊ घराने से था, लेकिन उन्होंने जयपुर घराने की बारीकियों को भी आत्मसात किया।
2. **उदय शंकर:** इन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य को 'फ्यूजन' के माध्यम से वैश्विक पहचान दिलाई। (इन्हें 'भारतीय आधुनिक नृत्य का जनक' कहा जाता है)।
3. **प्रेरणा श्रीमाली:** वर्तमान में जयपुर घराने की प्रखर नर्तकी।
4. **पंडित दुर्गालाल:** जयपुर घराने के स्तंभ माने जाते हैं।

2. राजस्थान में शास्त्रीय संगीत के घराने

शास्त्रीय संगीत में घरानों की परंपरा गुरु-शिष्य परंपरा का ही विकसित रूप है।

घराने का नाम	प्रवर्तक / संस्थापक	प्रमुख कलाकार	विशेष तथ्य
जयपुर-अतरौली घराना	अल्हादिया खाँ	किशोरी अमोनकर, मल्लिका अर्जुन मंसूर	इसे 'पेचीदा घराना' भी कहते हैं।

डागर घराना	बहराम खाँ डागर	डागर बंधु (नासिर मोइनुद्दीन)	यह घराना 'ध्रुपद' गायकी के लिए प्रसिद्ध है।
मेवाती घराना	घग्घे नज़ीर खाँ	पंडित जसराज	इसमें भक्ति और शास्त्रीयता का संगम है।
सेनिया घराना	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	—	सितार वादन हेतु प्रसिद्ध।
रंगीला घराना	फैयाज खाँ	—	—

3. प्रमुख संगीतज्ञ और उनका योगदान

- **अल्लादिला खाँ:** जयपुर-अतरौली घराने के सम्राट। इन्होंने जटिल रागों को सरल बनाया।
- **पंडित विश्व मोहन भट्ट:** जयपुर के निवासी। इन्होंने गिटार में सुधार कर 'मोहन वीणा' का आविष्कार किया और 1994 में **ग्रैमी अवार्ड** जीता।
- **गवरी देवी (बीकानेर):** मांड गायकी की सुप्रसिद्ध कलाकार।
- **अल्लाह जिलाई बाई:** 'केसरिया बालम' मांड गीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाई। (बीकानेर महाराजा गंगा सिंह के दरबार की गायिका)।

4. जयपुर घराने की सामरिक और सांस्कृतिक विशिष्टता

जयपुर घराने के कथक नृत्य में 'वीर रस' की प्रधानता का कारण राजस्थान का सामरिक इतिहास रहा है। यहाँ के राजाओं ने नृत्य में शक्ति और ओज को प्राथमिकता दी। तकनीकी रूप से, जयपुर घराना 'तांडव' पक्ष की ओर अधिक झुका हुआ है, जबकि अन्य घराने 'लास्य' (कोमलता) को प्रधानता देते हैं। संगीत के क्षेत्र में, 'ध्रुपद' गायकी को संरक्षित करने का श्रेय जयपुर के डागर परिवार को जाता है, जिन्होंने इसे मुगलों के पतन के बाद भी जीवित रखा।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** पंडित जसराज का जन्म हरियाणा में हुआ था, लेकिन उनके घराने (मेवाती) की जड़ें राजस्थान के मेवात क्षेत्र से जुड़ी हैं।
- **नोट:** राजस्थान का राज्य गीत 'केसरिया बालम' मांड शैली में गाया जाता है।
- कुछ स्रोतों में कथक का प्रवर्तक बिरजू महाराज को माना जाता है, जो गलत है। बिरजू महाराज आधुनिक काल के महान नर्तक थे, जबकि ऐतिहासिक प्रवर्तक भानुजी महाराज थे।

wincompete

6. त्वरित संदर्भ तालिका

विवरण	तथ्य
नृत्य का आदि घराना	जयपुर घराना (कथक)
मोहन वीणा के आविष्कारक	पं. विश्व मोहन भट्ट
ध्रुपद गायकी का घराना	डागर घराना
मांड गायकी की प्रसिद्ध शैली	केसरिया बालम
आधुनिक नृत्य के जनक	उदय शंकर

wincompete



1. मांगणियार समुदाय के कलाकार: कामायचा और खड़ताल वादन (मध्य-20वीं सदी)।



2. अल्लाह जिलाई बाई: मांड गायकी की 'मरु कोकिला' (पोर्ट्रेट पेंटिंग)।



3. लंगा समुदाय के संगीतकार: सिंधी सारंगी और सुरनाई वादन।



4. कामायचा वाद्य यंत्र: मांगणियार गायकी का आधार।



5. खड़ताल: लय और ताल का जादुई वाद्य।



6. जैसलमेर दुर्ग: मांड गायकी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

अध्याय 2: लोक संगीत की शैलियाँ (मांड, लंगा, मांगणियार) और प्रमुख लोक गायक

1. मांड गायकी (Maand Style): मरुधरा का शास्त्रीय स्वरूप

मांड राजस्थान की वह गौरवशाली गायन शैली है, जो 'लोक' और 'शास्त्रीय' संगीत के संधि स्थल पर स्थित है।

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** जैसलमेर क्षेत्र का प्राचीन नाम 'मांड' था, इसी क्षेत्र में विकसित होने के कारण इस शैली का नाम मांड पड़ा। यह मूलतः एक दरबारी (Patronage based) गायकी थी।
- **शिल्प और विशेषता:** मांड गायकी अपनी जटिल तानों और अलाप के लिए प्रसिद्ध है। यह श्रृंगार और वीर रस का अद्भुत मिश्रण है।
- **क्षेत्रीय विविधताएँ (Regional Variations):**
 - **बीकानेरी मांड:** इसकी तानें लंबी और गूँजने वाली होती हैं (अल्लाह जिलाई बाई)।
 - **जोधपुरी मांड:** इसमें ठहराव और गंभीरता अधिक होती है।
 - **जैसलमेरी मांड:** इसे मांड का सबसे प्राचीन और मौलिक रूप माना जाता है।
 - **जयपुर मांड:** इसमें शास्त्रीयता (रागों का प्रभाव) अधिक प्रबल होता है।

प्रमुख मांड कलाकार:

1. **अल्लाह जिलाई बाई (बीकानेर):** इन्हें 'मरु कोकिला' कहा जाता है। इन्होंने 'केसरिया बालम' गीत को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाया। इन्हें 1982 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
2. **गवरी देवी (बीकानेर):** मांड की ख्याति प्राप्त कलाकार।
3. **मांगी बाई (उदयपुर):** इन्होंने मांड शैली को मेवाड़ी प्रभाव के साथ प्रस्तुत किया।
4. **बत्रो बेगम (जयपुर):** जयपुर मांड की प्रसिद्ध कलाकार।

2. मांगणियार समुदाय (Manganiyar): ताल और सुर के धनी

मांगणियार जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में निवास करने वाला एक **मुस्लिम** समुदाय है, जो सदियों से हिंदू राजाओं और सामंतों के यहाँ संगीत सेवा दे रहा है।

- **सांस्कृतिक समन्वय:** यद्यपि ये मुस्लिम हैं, लेकिन इनके गीतों में हिंदू देवी-देवताओं (कृष्ण, राम, गणेश) की स्तुति प्रमुखता से मिलती है।
- **प्रमुख वाद्य यंत्र:** कामायचा इनका मुख्य वाद्य है। इसके अलावा ये **खड़ताल**, ढोलक और मोरचंग का प्रयोग भी करते हैं।
- **विशेषता:** इनकी गायकी में 'लय' (Rhythm) पर गजब का नियंत्रण होता है। खड़ताल का जादुई वादन इनकी पहचान है।
- **प्रमुख कलाकार:**
 - **साकर खाँ:** कामायचा के विश्व विख्यात कलाकार (2012 में पद्मश्री)।
 - **गाजी खाँ बरणा:** खड़ताल के जादुई वादक।
 - **लक्खा खाँ:** सिंधी सारंगी और गायन के सिद्धहस्त कलाकार (2021 में पद्मश्री)।

3. लंगा समुदाय (Langa): सारंगी और सुरों के जादूगर

लंगा समुदाय भी पश्चिमी राजस्थान (जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर) का एक वंशानुगत संगीतकार समुदाय है।

- **विभाजन:** लंगा समुदाय मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित है:
 1. **सारंगिया लंगा:** जो 'सारंगी' बजाते और गाते हैं।
 2. **सुरणईया लंगा:** जो 'सुरनाई' या अलगोजा (Surnai/Algoza) बजाते हैं।
- **संरक्षक:** ये मुख्य रूप से **सिंधी मुसलमानों** और **राजपूतों** के वंशानुगत संगीतकार रहे हैं।
- **प्रमुख वाद्य यंत्र:** सिंधी सारंगी, सतारा, अलगोजा और मुरला।
- **प्रमुख कलाकार:** करीम खाँ लंगा और कहरू खाँ लंगा।

4. अन्य पेशेवर संगीतकार जातियाँ

- **मिरासी (Mirasi):** ये पूरे राजस्थान में फैले हुए हैं और अपनी वाकपटुता एवं गायकी के लिए प्रसिद्ध हैं।

- **ढोली और दमामी:** ये मुख्य रूप से युद्ध और मांगलिक अवसरों पर वीर रस के गीत और नगाड़ा वादन के लिए जाने जाते हैं।
- **कालबेलिया:** इनकी गायकी में 'पुंगी' और 'खंजरी' का प्रयोग होता है, जो अब विश्व धरोहर सूची में शामिल है।

5. मांगणियार और लंगा गायकी में अंतर

अक्सर छात्र मांगणियार और लंगा समुदायों के बीच भ्रमित होते हैं। मांगणियार मुख्य रूप से 'कामायचा' का प्रयोग करते हैं और उनके जजमान (Patrons) अक्सर हिंदू (राजपूत) होते हैं। जबकि लंगा समुदाय 'सारंगी' को अपना मुख्य वाद्य मानता है। मांगणियार संगीत अधिक 'ऊर्जावान' और ताल प्रधान होता है, जबकि लंगा संगीत 'सुर' और 'मधुरता' पर अधिक केंद्रित होता है। कोमल कोठारी और विजयदान देथा जैसे विद्वानों ने इन समुदायों को 'रुपायण संस्थान' (बोरुंदा) के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया, जिससे यह संगीत आज 'वर्ल्ड म्यूजिक' का हिस्सा है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** कामायचा वाद्य यंत्र का निर्माण 'सारंगी' की तुलना में अधिक बड़ा होता है और इसमें 27 तार होते हैं, जिनमें से मुख्य तार 'घोड़े की पूँछ के बाल' के बने होते हैं।
- **नोट:** राजस्थान का राज्य गीत '**केसरिया बालम**' मांड राग में गाया जाता है, जो पति (प्रीतम) की प्रदेश से घर वापसी की प्रतीक्षा का गीत है।
- **विरोधाभास:** कुछ पुस्तकों में लंगा और मांगणियार को एक ही बताया जाता है, परंतु समाजशास्त्रीय और वाद्य यंत्रों की दृष्टि से ये दो पृथक और स्वतंत्र पहचान वाले संगीतकार समुदाय हैं।

7.तालिका: रेगिस्तानी गायकी

विशेषता	मांड शैली	मांगणियार शैली	लंगा शैली
क्षेत्र	जैसलमेर, बीकानेर	बाड़मेर, जैसलमेर	जोधपुर, बाड़मेर
मुख्य वाद्य	सारंगी, तानपुरा	कामायचा, खड़ताल	सिंधी सारंगी, अलगोजा
प्रमुख कलाकार	अल्लाह जिलाई बाई	साकर खाँ, लक्खा खाँ	करीम खाँ लंगा
मुख्य राग/गीत	केसरिया बालम	नींबूडा, हिचकी	सुवटिया (लोक प्रभाव)



1. रावणहत्था: सबसे प्राचीन तत् वाद्य, भोर्पो द्वारा पाबूजी की फड़ बांचते समय (ऐतिहासिक फोटो)।



2. कामायचा: मांगणियार समुदाय का प्रमुख तत् वाद्य, वादक साकर खाँ (मध्य-20वीं सदी)।



3. अलगोजा: राजस्थान का राज्य वाद्य, दो बांसुरियों का युग्म (सुषिर वाद्य)।



4. मोरचंग: राजस्थान का सबसे छोटा सुषिर वाद्य ('जूज हार्प')।



5. नगाड़ा: अवनद्ध वाद्य, युद्ध और मंदिरों में प्रयुक्त (पुष्कर)।



6. खड़ताल: घन वाद्य, लकड़ी के टुकड़ों से ध्वनि उत्पन्न (सिद्दीकी खाँ की शैली)।

अध्याय 3: लोक वाद्य यंत्र: तत्, सुषिर, अवनद्ध एवं घन वाद्य

1. तत् वाद्य (String Instruments): तारों की झंकार

वे वाद्य यंत्र जिनमें तारों के माध्यम से स्वर उत्पन्न किए जाते हैं, 'तत् वाद्य' कहलाते हैं। इन्हें 'गज' (Bow) या उंगलियों की मदद से बजाया जाता है।

- **रावणहत्था (Ravanhatha):** यह राजस्थान का सबसे प्राचीन और लोकप्रिय वाद्य है।
 - **बनावट:** नारियल की आधी कटोरी पर खाल मढ़कर बनाया जाता है। इसमें 9 तार होते हैं।
 - **उपयोग:** पाबूजी की फड़ बांचते समय **भील जाति के भोपों** द्वारा।
- **कामायचा (Kamaycha):** मांगणियार समुदाय का सबसे महत्वपूर्ण वाद्य।
 - **बनावट:** इसमें 27 तार होते हैं और इसका पेट (Belly) बहुत बड़ा और गोल होता है। मुख्य तार **'घोड़े की पूँछ के बाल'** से बने होते हैं।
 - **प्रसिद्ध वादक:** साकर खाँ (पद्मश्री)।
- **जंतर (Jantar):** यह वीणा का प्रारंभिक रूप माना जाता है। इसमें दो मगरमच्छ के आकार के तुम्बे होते हैं।
 - **उपयोग:** गुर्जर जाति के **भोपों** द्वारा देवनारायण जी की फड़ बांचते समय।
- **भपंग (Bhapang):** मेवात क्षेत्र (अलवर) का प्रसिद्ध वाद्य।
 - **प्रसिद्ध वादक:** जहूर खाँ मेवाती (भपंग के जादूगर)।

2. सुषिर वाद्य (Wind Instruments): फूँक से उत्पन्न संगीत

वे वाद्य जो फूँक मारकर या हवा के दबाव से बजाए जाते हैं।

- **अलगोजा (Algoza):** यह राजस्थान का राज्य वाद्य है। इसमें दो बांसुरियाँ एक साथ बजाई जाती हैं।
 - **प्रसिद्ध वादक:** रामनाथ चौधरी (जयपुर), जो नाक से अलगोजा बजाने के लिए प्रसिद्ध हैं।
- **मोरचंग (Morchang):** यह राजस्थान का सबसे छोटा वाद्य है। इसे 'जूज हार्प' (Jews Harp) भी कहा जाता है। इसे होठों के बीच रखकर बजाया जाता है।
- **पुंगी/बीन:** कालबेलिया समुदाय का मुख्य वाद्य, जो तुंबे से बना होता है।
- **बांकिया:** पीतल से बना वाद्य, जो मांगलिक अवसरों पर सरगड़ा समुदाय द्वारा बजाया जाता है।
- **नड:** जैसलमेर क्षेत्र का प्रसिद्ध सुषिर वाद्य। इसके प्रसिद्ध वादक **कर्णा भील** थे।

3. अवनद्ध / ताल वाद्य (Percussion Instruments): खाल से मढ़े वाद्य

वे वाद्य जो लकड़ी या धातु के घेरे पर चमड़ा मढ़कर बनाए जाते हैं और चोट मारकर बजाए जाते हैं।

- **मांडल (Mandal):** मिट्टी से बना वाद्य, जिसकी आकृति ढोलक जैसी होती है। इसका उपयोग **गवरी नृत्य** में भील करते हैं।
- **नगाड़ा (Nagara):** मंदिरों और युद्ध के समय बजाया जाने वाला वाद्य। पुष्कर के **रामकिशन सोलंकी** इसके प्रसिद्ध वादक हैं।
- **चंग:** शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर बजाया जाने वाला वृत्ताकार वाद्य।
- **डेरू:** आम की लकड़ी और खाल से बना वाद्य, जो गोगाजी के भक्तों द्वारा बजाया जाता है।

4. घन वाद्य (Idiophones): धातु या लकड़ी के ठोस वाद्य

वे वाद्य जो किसी ठोस धातु या लकड़ी से बने होते हैं और आपस में टकराने पर ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

- **खड़ताल (Khartal):** लकड़ी के दो टुकड़ों से बना वाद्य।
 - **प्रसिद्ध वादक:** सिद्दीकी खाँ मांगणियार (खड़ताल के जादूगर)।
- **मंजीरा:** कामड़ जाति की महिलाएँ **'तेरहताली नृत्य'** के दौरान शरीर के विभिन्न अंगों पर 13 मंजीरे बांधकर बजाती हैं।
- **भरणी:** मिट्टी के घड़े के मुख पर कांसे की थाली रखकर बजाया जाने वाला वाद्य। यह मुख्य रूप से अलवर-भरतपुर क्षेत्र में सर्पदंश के उपचार के समय बजाया जाता है।

5. वाद्यों का सामाजिक-धार्मिक अनुस्तरण

राजस्थान के लोक वाद्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे विशिष्ट जातियों और लोक देवताओं से गहराई से जुड़े हैं। जैसे, रावणहत्या का संबंध पाबूजी से है, तो जंतर का देवनारायण जी से। अलगोजा का राज्य वाद्य होना चरवाहा संस्कृति (Meena/Gujjar communities) की प्रधानता को दर्शाता है। दिलचस्प बात यह है कि कामायचा जैसे जटिल तत् वाद्य का प्रयोग करने वाले मांगणियार कलाकार मुस्लिम होकर भी हिंदू लोक-गाथाओं के संरक्षक बने हुए हैं। यह संगीत की 'धार्मिक तटस्थता' का श्रेष्ठ उदाहरण है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** मोरचंग को राजस्थान का 'जूज हार्प' कहा जाता है क्योंकि इसकी बनावट यूरोपीय वाद्य यंत्र 'जूज हार्प' से मिलती है।
- **नोट:** रामनाथ चौधरी नाक से अलगोजा बजाने की दुर्लभ कला के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हैं।
- कुछ पुस्तकों में 'सतारा' को तत् वाद्य माना जाता है, जबकि यह वास्तव में एक **सुषिर वाद्य** है जो अलगोजा, बांसुरी और शहनाई का मिश्रण है।

7. त्वरित संदर्भ तालिका: वाद्य यंत्र और वादक

श्रेणी	वाद्य यंत्र	प्रमुख वादक / समुदाय	विशेष टिप्पणी
तत्	कामायचा	साकर खाँ	27 तार, गज से वादन।
तत्	भपंग	जहूर खाँ मेवाती	मेवात क्षेत्र का मुख्य वाद्य।
सुषिर	अलगोजा	रामनाथ चौधरी	राजस्थान का राज्य वाद्य।
सुषिर	नड	कर्णा भील	जैसलमेर का लोक वाद्य।
अवनद्ध	नगाड़ा	रामकिशन सोलंकी	'पुष्कर के नगाड़ा जादूगर'।
घन	खड़ताल	सिद्दीकी खाँ	मांगणियार शैली की पहचान।



1. घूमर नृत्य: राजस्थान की 'आत्मा'
(ऐतिहासिक फोटो)।



2. कालबेलिया नृत्य: प्रणता
गुलाबो सपेरा (पेंटिंग)।



3. तेरहताली नृत्य: 13 मंजीरों का
प्रदर्शन (फोटो)।



4. गवरी लोक नाट्य: भीलों का 'मेरु
नाट्य' (फोटो)।



5. फड़ कला: पाबूजी की फड़ (कपड़े
पर पेंटिंग)।



6. कठपुतली कला: धागों का जादू
(फोटो)।

अध्याय 4: राजस्थान के लोक नृत्य: जनजातीय, क्षेत्रीय एवं व्यावसायिक नृत्य

1. राजस्थान का राज्य नृत्य: घूमर (Ghoomar)

घूमर को 'राजस्थान का राज्य नृत्य', 'नृत्यों का सिरमौर' और 'राजस्थानी आत्मा' कहा जाता है।

- **विशेषता:** यह केवल महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। इसमें स्त्रियाँ एक घेरे में चक्कर काटते हुए नृत्य करती हैं।
- **सवाई (Sawai):** घूमर में 8 चरणों की जो विशिष्ट चाल होती है, उसे 'सवाई' कहा जाता है।
- **अवसर:** मांगलिक पर्वों, विशेषकर गणगौर और तीज के अवसर पर।
- **रूप:** इसके तीन प्रमुख रूप हैं:
 1. **घूमर:** साधारण स्त्रियों द्वारा।
 2. **लूर:** गरासिया जनजाति की महिलाओं द्वारा।
 3. **झूमरियो:** बालिकाओं द्वारा।

2. यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर: कालबेलिया नृत्य

2010 में यूनेस्को ने कालबेलिया नृत्य को अपनी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया।

- **प्रणेता:** गुलाबो सपेरा ने इस नृत्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।
- **विशेषता:** यह सपेरा जाति द्वारा किया जाता है। इसमें बीन और खंजरी का प्रयोग होता है। पोशाक काले रंग की होती है जिस पर कशीदाकारी होती है।
- **उप-प्रकार:** कालबेलिया नृत्य चार नृत्यों का समूह है:
 1. **इण्डोणी:** पुंगी और खंजरी के साथ।
 2. **पणिहारी:** श्रृंगार प्रधान।
 3. **बागरिया:** भीख माँगते समय किया जाने वाला (केवल महिलाओं द्वारा)।
 4. **शंकरिया:** प्रेम कथा पर आधारित युगल नृत्य।

3. जनजातीय नृत्य (Tribal Dances)

A. भीलों का नृत्य: गवरी (Gavari)

- **उपनाम:** इसे 'राई नृत्य' भी कहते हैं। यह राजस्थान का सबसे प्राचीन लोक नाट्य-नृत्य (मेरु नाट्य) है।
- **कथा:** यह भगवान शिव और भस्मासुर की कथा पर आधारित है।
- **अवसर:** सावन-भादों मास में 40 दिनों तक मनाया जाता है।

B. गरासियों का नृत्य: वालर (Walar)

- **विशेषता:** यह बिना किसी वाद्य यंत्र के किया जाने वाला नृत्य है। यह अर्द्ध-वृत्ताकार घेरे में युगल नृत्य के रूप में किया जाता है। इसे 'गरासियों की घूमर' कहते हैं।

4. व्यावसायिक लोक नृत्य (Professional Dances)

वे नृत्य जो जीविकोपार्जन हेतु मंचों पर प्रदर्शित किए जाते हैं।

A. तेरहताली नृत्य (Terah Taali):

- **जाति:** कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा।
- **केंद्र:** पादरला गाँव (पाली) और रामदेवरा (जैसलमेर)।
- **विशेषता:** महिलाएँ शरीर पर 13 मंजीरे बांधती हैं (9 दाएं पैर पर, 2 हाथों की कोहनी पर और 2 हाथों में)।
- **प्रसिद्ध नृत्यांगना:** मांगी बाई (पद्मश्री)।

B. कच्छी घोड़ी (Kachhi Ghodi):

- **क्षेत्र:** शेखावाटी।
- **विशेषता:** यह केवल **पुरुषों** द्वारा किया जाता है। इसमें नर्तक बाँस की घोड़ी कमर पर बांधकर नृत्य करते हैं। यह 'पैटर्न बनाने' की कला हेतु प्रसिद्ध है (जैसे फूल का खिलना और बंद होना)।

C. चरी नृत्य (Chari):

- **जाति:** गुर्जर जाति की महिलाओं द्वारा।
- **केंद्र:** किशनगढ़ (अजमेर)।
- **प्रसिद्ध नृत्यांगना:** **फलकू बाई**। इसमें सिर पर जलता हुआ दीपक रखकर चरी (कलश) को संतुलित किया जाता है।

5. क्षेत्रीय एवं धार्मिक नृत्य

- **अग्नि नृत्य (Agni Dance):** बीकानेर (कतियासर)। जसनाथी संप्रदाय के 'सिद्ध' पुरुषों द्वारा "**फतेह-फतेह**" के नारे के साथ धधकते अंगारों पर किया जाता है।
- **बम नृत्य:** अलवर-भरतपुर क्षेत्र में नई फसल की खुशी में।
- **ढोल नृत्य:** जालौर क्षेत्र में '**थाकना**' शैली में। इसे जय नारायण व्यास ने संरक्षण दिया था।

6. नृत्यों का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य

राजस्थान के लोक नृत्य केवल शारीरिक संचालन नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश के वाहक हैं। कालबेलिया नृत्य जहाँ 'जैव-विविधता' (सांपों के साथ जुड़ाव) और संघर्ष का प्रतीक है, वहीं तेरहताली नृत्य भक्ति (बाबा रामदेव) और जटिल एकाग्रता का मिश्रण है। गवरी नृत्य का 40 दिनों तक चलना आदिवासी समुदाय की अपनी जड़ों और धर्म के प्रति अटूट आस्था को दर्शाता है। वालर में वाद्य यंत्रों का न होना यह सिद्ध करता है कि लय और ताल मनुष्य की नैसर्गिक आवाज़ और कदमों में निहित है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** बिंदौरी नृत्य झालावाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक नृत्य है।
- **नोट:** कनाणा (बाड़मेर) गैर नृत्य का प्रमुख केंद्र है।
- कुछ स्रोतों में 'पणिहारी' को केवल संगीत माना जाता है, जबकि यह राजस्थान की एक प्रसिद्ध नृत्य शैली भी है जो कालबेलियाई परंपरा का हिस्सा है।

8. तालिका: राजस्थान के प्रमुख नृत्य

नृत्य	जाति/समुदाय	क्षेत्र	विशेष
घूमर	सभी (महिला)	राजस्थान	नृत्यों का सिरमौर।
वालर	गरासिया	सिरोही	बिना वाद्य यंत्र के।

अग्नि	जसनाथी	बीकानेर	अंगारों पर नृत्य।
तेरहताली	कामड़	रामदेवरा	13 मंजीरों का प्रयोग।
कच्ची घोड़ी	कुम्हार/सरगड़ा	शेखावाटी	पैटर्न बनाने की कला।
गवरी	भील	मेवाड़	शिव-भस्मासुर कथा।



wincompete



1. कुचामनी ख्याल: पुरुष कलाकारों द्वारा महिला पात्रों का अभिनय (ऐतिहासिक फोटो)।



2. रम्मत: बीकानेर की होली पर लोक नाट्य प्रस्तुति (पेंटिंग)।



3. तमाशा: जयपुर के खुले मंच (अखाड़े) पर प्रस्तुति (फोटो)।



4. फड़ कला: पाबूजी की जीवन गाथा का चित्रण (कपड़े पर पेंटिंग)।



5. कठपुतली कला: धागों से संचालित लकड़ी की पुतलियां (फोटो)।



6. स्वांग (बहुरूपिया कला): जानकीलाल भांड जैसे कलाकारों की कला (पोट्रेट)।

अध्याय 5: लोक नाट्य: ख्याल, रम्मत, तमाशा, फड़ और कठपुतली कला

यह सामग्री डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. महेंद्र भानावत (लोक नाट्य विशेषज्ञ) और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थानी लोक नाट्य' ग्रंथ के आधिकारिक तथ्यों पर आधारित है।

1. ख्याल (Khayal): राजस्थानी लोक नाट्य का मुख्य आधार

राजस्थान में 'ख्याल' सबसे लोकप्रिय लोक नाट्य विधा है। यह 18वीं शताब्दी में अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

- **कुचामनी ख्याल (नागौर):**
 - **प्रवर्तक:** लक्ष्मीराम (Lachhiram)।
 - **विशेषता:** इसका स्वरूप ओपेरा जैसा होता है। इसमें पुरुष ही स्त्री पात्रों का अभिनय करते हैं। इसमें ढोलक और शहनाई मुख्य वाद्य होते हैं।
 - **प्रमुख कलाकार:** उगमराज।
- **शेखावाटी / चिड़ावा ख्याल:**
 - **प्रवर्तक:** नैनूराम (Nanuram)।
 - **विशेषता:** इसमें गीतों के माध्यम से संवाद होते हैं। दुलिया राणा इसके प्रसिद्ध कलाकार रहे हैं।
- **तुरा-कलंगी ख्याल (मेवाड़):**
 - **प्रवर्तक:** शाह अली (कलंगी - पार्वती का प्रतीक) और तुकनगीर (तुरा - शिव का प्रतीक)।
 - **विशेषता:** यह एक संवादात्मक काव्य मुकाबला है। इसमें चंग का प्रयोग प्रमुखता से होता है। इसके मुख्य केंद्र चित्तौड़गढ़, निंबाहेड़ा और घोंसुंडा हैं।
- **हेला ख्याल:** लालसोट (दौसा) और सवाई माधोपुर क्षेत्र का प्रसिद्ध। इसमें लंबी टेर (हेला) देना इसकी मुख्य विशेषता है।

2. रम्मत (Rammat): बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत

रम्मत का अर्थ है 'खेलना'। यह बीकानेर और जैसलमेर क्षेत्र का प्रमुख लोक नाट्य है।

- **अवसर:** मुख्य रूप से होली के अवसर पर।
- **प्रमुख व्यक्तित्व:** मनीराम व्यास, तुलसीदास, फागू महाराज और महाराज तेज कवि (जैसलमेर)।
- **विशेष तथ्य:** तेज कवि ने 'स्वतंत्र बावनी' नामक रम्मत लिखी और उसे महात्मा गांधी को भेंट किया था।
- **प्रारंभ:** रम्मत के प्रारंभ में रामदेव जी के भजन गाए जाते हैं।

3. तमाशा (Tamasha): जयपुर की अनूठी शैली

यह जयपुर की एक विशिष्ट नाट्य शैली है, जो महाराजा सवाई प्रताप सिंह के काल में शुरू हुई।

- **प्रवर्तक:** वंशीधर भट्ट।
- **विशेषता:** यह खुले मंच पर होता है, जिसे 'अखाड़ा' कहा जाता है। इसमें शास्त्रीय संगीत और लोक नाट्य का मिश्रण होता है।
- **प्रमुख नाट्य:** हीर-रांझा, जोगी-जोगन, और गोपीचन्द।

4. फड़ कला (Phad Art): चलता-फिरता चित्रांकन

फड़ कपड़े पर लोक देवताओं के जीवन की गाथाओं का चित्रण और उनका वाचन है।

- **प्रमुख केंद्र:** शाहपुरा (भीलवाड़ा)। यहाँ का 'जोशी परिवार' इस कला का मुख्य संरक्षक है।
- **प्रसिद्ध कलाकार:** श्रीलाल जोशी (पद्मश्री) और महिला कलाकार पार्वती जोशी।
- **प्रमुख फड़:**
 - **पाबूजी की फड़:** यह राजस्थान की सबसे लोकप्रिय फड़ है। इसका वाचन रावणहत्या वाद्य के साथ भील भोपे करते हैं।
 - **देवनारायण जी की फड़:** यह सबसे पुरानी, सबसे लम्बी और सबसे छोटी (टिकट पर चित्रण के कारण) फड़ है। इसका वाचन जंतर वाद्य के साथ गुर्जर भोपे करते हैं।
 - **भैसासुर की फड़:** इसका वाचन नहीं किया जाता, केवल दर्शन किए जाते हैं।

5. कठपुतली कला (Puppetry): धागों का जादू

कठपुतली राजस्थान की प्राचीनतम लोक नाट्य विधाओं में से एक है।

- **जाति:** नट या भाट जाति के लोग इसमें निपुण होते हैं।
- **लकड़ी:** कठपुतली मुख्य रूप से **आड़ू की लकड़ी** से बनाई जाती है।
- **संरक्षण:** देवीलाल सामर ने 1952 में उदयपुर में '**भारतीय लोक कला मंडल**' की स्थापना कर इस कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया।
- **प्रसिद्ध नाट्य:** 'सिंहासन बत्तीसी' और 'पृथ्वीराज-संयोगिता'।

6. अन्य लोक नाट्य

- **स्वांग (Swang):** इसे 'बहुरूपिया कला' भी कहते हैं। भीलवाड़ा के **जानकीलाल भांड** (मंकी मैन) इसके विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं।
- **नौटंकी:** भरतपुर, धौलपुर और करौली क्षेत्र में प्रसिद्ध। भूरीलाल इसके प्रमुख कलाकार थे।

7. लोक नाट्य और सामाजिक प्रतिरोध

राजस्थान के लोक नाट्य केवल मनोरंजन नहीं थे, बल्कि वे तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों पर कटाक्ष का माध्यम थे। रम्मत के माध्यम से तेज कवि ने ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी, तो फड़ कला ने लोक देवताओं के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश फैलाया। देवीलाल सामर के प्रयासों ने यह सिद्ध किया कि उपेक्षित कठपुतली कला को यदि वैज्ञानिक संरक्षण मिले, तो वह विश्व की सर्वश्रेष्ठ मूक अभिव्यक्ति बन सकती है। ये विधाएं राजस्थानी भाषा की विविध बोलियों के जीवित भंडार हैं।

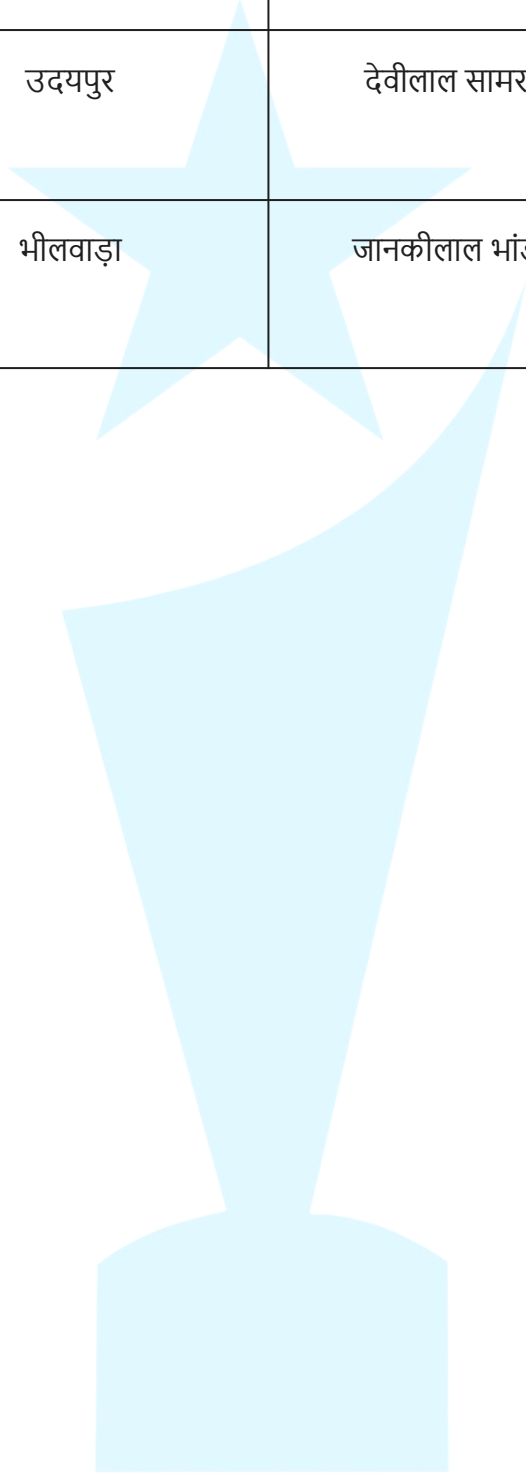
8. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** फड़ ठंडी करना—जब फड़ पुरानी या जीर्ण-शीर्ण हो जाती है, तो उसे पवित्र पुष्कर सरोवर में विसर्जित किया जाता है।
- **नोट:** गवरी को राजस्थान का 'मेरु नाट्य' (रीढ़ की हड्डी) कहा जाता है।
- कुछ स्रोतों में तमाशा को केवल लोक नाट्य माना जाता है, परंतु इसमें शास्त्रीय रागों का प्रयोग इसे अन्य नाटकों से उच्च श्रेणी में रखता है।

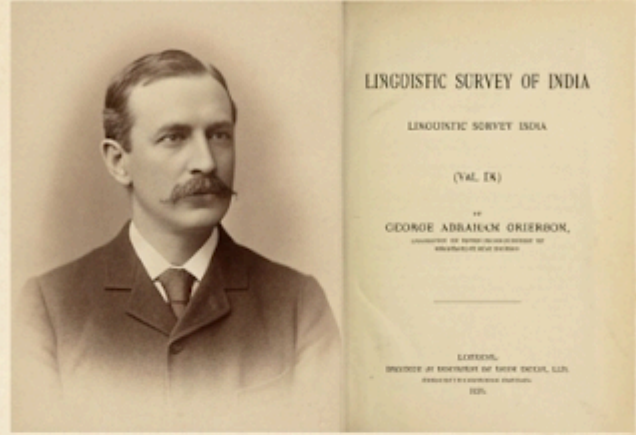
9. तालिका: राजस्थान के लोक नाट्य

लोक नाट्य	प्रमुख केंद्र	प्रमुख व्यक्तित्व	विशेष विवरण
कुचामनी ख्याल	नागौर	लक्ष्मीराम	ओपेरा शैली।
रम्मत	बीकानेर	फागू महाराज	होली पर अखाड़ों में।
तमाशा	जयपुर	वंशीधर भट्ट	मंच को 'अखाड़ा' कहते हैं।

फड़	शाहपुरा	श्रीलाल जोशी	कपड़े पर चित्र गाथा।
कठपुतली	उदयपुर	देवीलाल सामर	आड़ू की लकड़ी का प्रयोग।
स्वांग	भीलवाड़ा	जानकीलाल भांड	बहूरूपिया कला।



wincompete



1. मरू भाषा का प्राचीनतम उल्लेख: उद्योतन सूरी कृत 'कुवलयमाला' (778 ई.) का एक पृष्ठ।

2. वैज्ञानिक वर्गीकरण: ज्यॉर्ज ग्रियर्सन और 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (1912)।



3. पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी): डिंगल साहित्य (वीर रस) और चारण शैली (पेंटिंग)।

4. पूर्वी राजस्थानी (ढूँढाड़ी): पिंगल शैली (श्रृंगार रस) और ब्रज का प्रभाव (पेंटिंग)।



5. राजस्थानी बोलियों का भौगोलिक वर्गीकरण और प्रमुख क्षेत्र (ऐतिहासिक मानचित्र)।

बिंदु 2: राजस्थानी भाषा: बोलियाँ और साहित्य

अध्याय 6: राजस्थानी भाषा का उद्भव, विकास और बोलियों का वर्गीकरण

यह सामग्री डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी और डॉ. ज्योर्ज अब्राहम ग्रियर्सन के मूल शोध पत्रों तथा राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रकाशनों पर आधारित है।

1. राजस्थानी भाषा का उद्भव और ऐतिहासिक विकास

राजस्थानी भाषा का विकास 'भारतीय आर्य भाषा' परिवार के अंतर्गत हुआ है। इसका क्रमिक विकास निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता है:

- **मूल स्रोत:** वैदिक संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश।
- **अपभ्रंश काल:** राजस्थानी का उद्भव मुख्य रूप से 'गुर्जर अपभ्रंश' (कुछ विद्वानों के अनुसार शौरसेनी अपभ्रंश) से माना जाता है।
- **विकास के पड़ाव:**
 1. **प्राचीन काल (1100 - 1450 ई.):** भाषा का प्रारंभिक रूप, जिसमें जैन साहित्य की प्रधानता रही।
 2. **मध्य काल (1450 - 1850 ई.):** राजस्थानी का 'स्वर्ण काल'। इसमें डिंगल, पिंगल और लोक साहित्य का चरम विकास हुआ।
 3. **आधुनिक काल (1850 से अब तक):** गद्य साहित्य और आधुनिक बोलियों का व्यवस्थित रूप।

मरू भाषा का प्राचीनतम उल्लेख: उद्योतन सूरी ने अपनी पुस्तक 'कुवलयमाला' (778 ई.) में 18 देशी भाषाओं का उल्लेख किया, जिसमें पश्चिमी राजस्थान की भाषा को 'मरू भाषा' कहा गया है।

2. राजस्थानी बोलियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण

राजस्थानी भाषा के लिए 'राजस्थानी' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ज्योर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1912 ई. में अपनी पुस्तक 'Linguistic Survey of India' में किया था।

ज्योर्ज ग्रियर्सन का वर्गीकरण (पाँच मुख्य उप-समूह):

1. **पश्चिमी राजस्थानी:** मारवाड़ी, मेवाड़ी, बाड़ी, शेखावाटी।
2. **उत्तर-पूर्वी राजस्थानी:** मेवाती और अहीरवाटी।
3. **मध्य-पूर्वी राजस्थानी:** ढूँढाड़ी और हाड़ौती।
4. **दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी:** मालवी और निमाड़ी।
5. **दक्षिणी राजस्थानी:** भीली और बागड़ी।

एल.पी. टेसीटोरी का वर्गीकरण:

इटली के विद्वान टेसीटोरी ने राजस्थानी को दो मुख्य भागों में बाँटा:

- पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी)
- पूर्वी राजस्थानी (ढूँढाड़ी)

3. प्रमुख बोलियाँ और उनके भेद: मारवाड़ी बनाम ढूँढाड़ी

A. मारवाड़ी (Marwari):

यह राजस्थान की सबसे समृद्ध और क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी बोली है।

- **क्षेत्र:** जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, पाली, और नागौर का कुछ हिस्सा।
- **साहित्यिक रूप:** मारवाड़ी के साहित्यिक रूप को 'डिंगल' कहा जाता है।
- **उप-बोलियाँ:** मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावाटी, और देवड़ावाटी।

- **विशेषता:** इसमें 'ष' के स्थान पर 'स' का उच्चारण और 'ल' के स्थान पर 'ळ' का प्रयोग प्रमुखता से होता है।

B. ढूँढाड़ी (Dhundhari):

यह जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान की सबसे बड़ी बोली है।

- **क्षेत्र:** जयपुर, किशनगढ़, टोंक, और अजमेर-मेरवाड़ा।
- **साहित्यिक रूप:** ढूँढाड़ी के साहित्यिक रूप को 'पिंगल' कहा जाता है (ब्रज भाषा के प्रभाव के कारण)।
- **उप-बोलियाँ:** तोरावाटी, राजावाटी, चौरासी, नागरचोल।
- **व्याकरणिक विशेषता:** इसमें 'छै' (है) शब्द का प्रयोग सहायक क्रिया के रूप में अनिवार्य रूप से होता है।

4. अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रीय बोलियाँ

- **मेवाती:** अलवर और भरतपुर (मेवात क्षेत्र)। यह हिंदी और राजस्थानी के बीच सेतु का कार्य करती है। चरणदासी और लालदासी साहित्य इसी में है।
- **मालवी:** झालावाड़, प्रतापगढ़ और कोटा। इसकी दो उप-बोलियाँ 'रांगड़ी' और 'नीमाड़ी' हैं। रांगड़ी को कर्कश बोली माना जाता है।
- **बागड़ी:** झुंजरपुर और बाँसवाड़ा। ग्रियर्सन ने इसे 'भीली बोली' कहा है क्योंकि इस पर गुजराती का गहरा प्रभाव है।

5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: डिंगल और पिंगल का साहित्यिक संघर्ष

राजस्थानी साहित्य के दो ध्रुव हैं—डिंगल और पिंगल। डिंगल विशुद्ध रूप से मारवाड़ी का साहित्यिक रूप है, जो चारण कवियों द्वारा वीर रस के लिए विकसित किया गया। इसकी प्रकृति ओजस्वी और कठोर ध्वनियों वाली है। इसके विपरीत, पिंगल पूर्वी राजस्थानी (ढूँढाड़ी/मेवाती) और ब्रज भाषा का मिश्रण है, जिसे भाट कवियों ने श्रृंगार रस और कोमल काव्यों के लिए अपनाया। टेसीटोरी ने डिंगल को 'चारणी' और पिंगल को 'भाट' काव्य शैली कहा है। परीक्षा की दृष्टि से यह समझना अनिवार्य है कि डिंगल पश्चिमी (मारवाड़) की पहचान है और पिंगल पूर्वी (आमेर/भरतपुर) की।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** राजस्थानी भाषा का सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रंथ 'भरतेश्वर बाहुबली घोर' (वज्रसेन सूरी) माना जाता है।
- **नोट:** अहीरवाटी (राठी) बोली मुंडावर (अलवर) और कोटपुतली क्षेत्र में बोली जाती है, जिस पर हरियाणवी (बाँगरू) का प्रभाव है।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान राजस्थानी का उद्भव 10वीं शताब्दी मानते हैं, लेकिन भाषाविदों के अनुसार 12वीं शताब्दी का उत्तरार्ध इसका वास्तविक स्वतंत्र काल है।

7. अध्याय 6: त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Reference)

बोली	मुख्य क्षेत्र	उप-बोली	विशेष तथ्य
मारवाड़ी	जोधपुर, जैसलमेर	थली, ढाटी	डिंगल साहित्य, क्षेत्रफल में सबसे बड़ी।

ढूढाड़ी	जयपुर, टोंक	तोरवाटी	'छै' का प्रयोग, पिंगल शैली।
मालवी	झालावाड़	रांगड़ी	कर्कशता के लिए जानी जाती है।
मेवाती	अलवर, भरतपुर	अहीरवाटी	हिंदी और राजस्थानी का मिश्रण।
बागड़ी	डूंगरपुर, बाँसवाड़ा	—	ग्रियर्सन ने 'भीली' कहा।



wincompete

बिंदु 2: राजस्थानी भाषा: बोलियाँ और साहित्य

अध्याय 7: राजस्थानी साहित्य के प्रमुख रूप (डिंगल-पिंगल) और विधाएँ

यह सामग्री डॉ. मोतीलाल मेनारिया की 'राजस्थानी साहित्य का इतिहास', डॉ. एल.पी. टेसीटोरी के शोध और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के प्रामाणिक साक्ष्यों पर आधारित है।

1. साहित्यिक शैलियाँ: डिंगल बनाम पिंगल

राजस्थानी साहित्य मुख्य रूप से दो प्रमुख काव्य शैलियों में विभक्त है, जिनका वर्गीकरण भौगोलिक और भाषाई आधार पर किया गया है।

विशेषता	डिंगल (Dingal)	पिंगल (Pingal)
क्षेत्र	पश्चिमी राजस्थान (मारवाड़)	पूर्वी राजस्थान (जयपुर, भरतपुर)
आधार	मारवाड़ी भाषा का साहित्यिक रूप	ब्रज भाषा और ढूँढाड़ी का मिश्रण
कवि वर्ग	मुख्य रूप से चारण कवि	मुख्य रूप से भाट कवि
मुख्य रस	वीर रस (ओजस्वी स्वर)	श्रृंगार और शांत रस (कोमल स्वर)
प्रकृति	कठोर और कर्णकटु ध्वनियाँ	मधुर और कोमल ध्वनियाँ

2. साहित्य की प्रमुख विधाएँ (Literary Genres)

- **ख्यात (Khyat):** रियासत के शासकों द्वारा अपने सम्मान और वंश की कीर्ति के लिए लिखवाए गए ऐतिहासिक विवरण।
 - उदाहरण: मुंहणोत नैणसी री ख्यात, दयालदास री ख्यात।
- **वात (Vaata):** ऐतिहासिक या पौराणिक कहानियाँ। ये गद्य और पद्य दोनों में हो सकती हैं।
 - उदाहरण: राव अमरसिंह री वात, पाबूजी री वात।
- **रासो (Raso):** राजाओं की विजयों और वीरता का वर्णन करने वाले काव्य ग्रंथ।
 - उदाहरण: पृथ्वीराज रासो (चंद्रबरदाई), बीसलदेव रासो (नरपति नाल्ह)।
- **वेली (Veli):** छंदबद्ध काव्य जिसमें भक्ति या वीरता का वर्णन हो।
 - उदाहरण: वेलि क्रिसन रुकमणी री (पृथ्वीराज राठौड़)।

- **वचनिका (Vachanika):** अंत्यानुप्रास युक्त गद्य-पद्य मिश्रित रचना।
 - **उदाहरण:** *अचलदास खींची री वचनिका* (शिवदास गाडण)।
- **दवावैत (Davavait):** उर्दू और फारसी शब्दों से युक्त प्रशंसात्मक गद्य विधा।

3. प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ और महाकाव्य

A. मुंहणोत नैणसी री ख्यात (Nainsi ri Khyat):

- **लेखक:** मुंहणोत नैणसी (महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के मंत्री)।
- **विशेषता:** इसे राजस्थान की 'प्रथम ख्यात' माना जाता है। इसमें 'है' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है।
- **उपाधि:** मुंशी देवी प्रसाद ने नैणसी को 'राजपूताने का अबुल फजल' कहा है। उनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना 'मारवाड़ रा परगना री विगत' को राजस्थान का 'गज़ेटियर' कहा जाता है।

B. पृथ्वीराज रासो (Prithviraj Raso):

- **लेखक:** चंद्रबरदाई (पृथ्वीराज चौहान III के दरबारी कवि)।
- **विशेषता:** यह हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसमें 'अग्रिकुंड से राजपूतों की उत्पत्ति' का सिद्धांत दिया गया है।
- **पूर्णता:** इसे चंद्रबरदाई के पुत्र जल्हण ने पूर्ण किया था।

C. वेलि क्रिसन रुकमणी री (Veli Krisan Rukmani Ri):

- **लेखक:** पृथ्वीराज राठौड़ (बीकानेर)। इन्होंने यह ग्रंथ गागरोन दुर्ग में लिखा था।
- **विशेषता:** दुरसा आढा ने इस ग्रंथ को 'पाँचवाँ वेद' और 'उत्रीसवाँ पुराण' कहा है।

4. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: ख्यात साहित्य की ऐतिहासिक प्रामाणिकता

राजस्थानी साहित्य में 'ख्यात' केवल राजाओं की प्रशंसा मात्र नहीं हैं, बल्कि वे मध्यकालीन राजस्थान के सामाजिक और आर्थिक भूगोल के दस्तावेज हैं। मुंहणोत नैणसी की रचनाओं में जनगणना, राजस्व प्रणाली और सीमाओं का जो विवरण मिलता है, वह तत्कालीन सांख्यिकी के प्रति उनकी वैज्ञानिक दृष्टि को दर्शाता है। जहाँ 'रासो' साहित्य में काव्यात्मक कल्पना (वीर रस) का पुट अधिक है, वहीं 'ख्यात' और 'परगना री विगत' जैसी रचनाएँ तथ्यात्मक इतिहास के अधिक निकट हैं। डिंगल शैली ने मारवाड़ के योद्धाओं के स्वाभिमान को शब्दों के माध्यम से अमर कर दिया।

5. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** **कान्हाड़दे प्रबन्ध** (पद्मनाभ द्वारा रचित) जालोर के चौहान शासक कान्हाड़देव और अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध का सबसे प्रामाणिक विवरण है।
- **नोट:** **पद्मावत** (मलिक मोहम्मद जायसी, 1540 ई.) यद्यपि अवधी भाषा में है, लेकिन चित्तौड़गढ़ के इतिहास और रानी पद्मिनी की गाथा के लिए राजस्थान में इसे ऐतिहासिक संदर्भ के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता है।
- **विरोधाभास:** *पृथ्वीराज रासो* की प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों में मतभेद है। गौरीशंकर हीराचंद ओझा इसे 'अप्रामाणिक' मानते हैं, जबकि कर्नल टॉड ने इसे पूर्णतः 'प्रामाणिक' माना था।

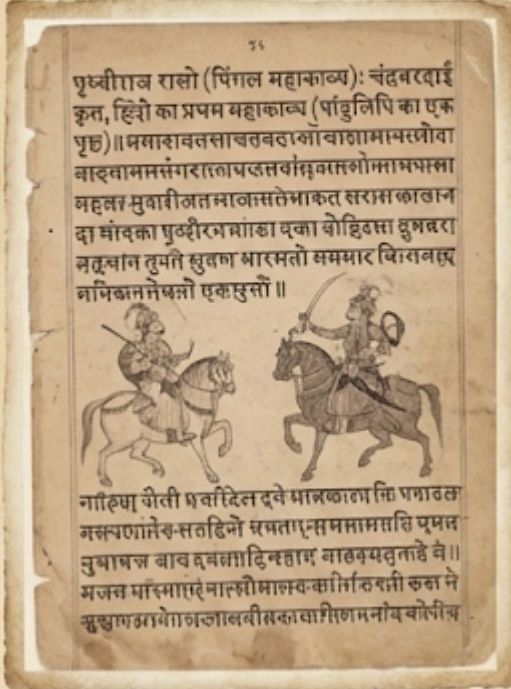
wincompete

6. तालिका (Quick Reference)

ग्रंथ	लेखक	विधा / शैली	विशेष महत्व
नैणसी री ख्यात	मुंहणोत नैणसी	ख्यात / डिंगल	राजस्थान की प्रथम ख्यात।
पृथ्वीराज रासो	चंद्रबरदाई	रासो / पिंगल	हिंदी का प्रथम महाकाव्य।
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़	वेली / डिंगल	डिंगल का हैरोस (L.P. टेसीटोरी)।
हम्मीर महाकाव्य	नयनचंद्र सूरी	महाकाव्य / संस्कृत	रणथंभौर के चौहानों का इतिहास।
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण	डिंगल	बूंदी का इतिहास, वीर सतसई के लेखक।

wincompete

अध्याय 7: राजस्थानी साहित्य - डिंगल, पिंगल और प्रमुख विधाएँ।



1. पृथ्वीराज रासो (पिंगल महाकाव्य):
चंद्रवरदाई कृत, हिंदी का प्रथम
महाकाव्य (पांडुलिपि का एक पृष्ठ)।



2. डिंगल शैली: चारण कवियों द्वारा वीर
रस का ओजस्वी गायन (लघुचित्र)।



5. प्रामाणिक स्रोत: डॉ.
मोतीलाल मेनारिया की
पुस्तक।



3. गागरोन दुर्ग: जहाँ पृथ्वीराज राठौड़ ने 'वेलि
क्रिसन रुकमणी री' की रचना की (ऐतिहासिक
फोटो)।



4. मुंहणोत नैणसी: 'राजपूताने का अबुल
फजल' और 'नैणसी री ख्यात' के लेखक
(काल्पनिक पोर्ट्रेट)।

बिंदु 2: राजस्थानी भाषा: बोलियाँ और साहित्य

अध्याय 8: राजस्थानी लोक साहित्य: लोकगीत, कहावतें, पहेलियाँ और फड़ साहित्य

यह सामग्री डॉ. महेंद्र भानावत, कोमल कोठारी और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थानी लोक साहित्य' के प्रामाणिक संकलनों पर आधारित है।

1. राजस्थानी लोकगीत (Folk Songs): मरुधरा की धड़कन

राजस्थानी लोकगीत यहाँ के जन-जीवन के हर्ष, विषाद, ऋतु चक्र और वीर गाथाओं का सजीव चित्रण हैं। इन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

A. विरह और प्रेम प्रधान गीत:

- **कूर्जा (Kurjan):** कूर्जा एक पक्षी है। इस गीत में विरहिणी नायिका कूर्जा पक्षी के माध्यम से अपने परदेश गए पति को संदेश भेजती है।
- **मूमल (Mumal):** यह जैसलमेर क्षेत्र का प्रसिद्ध गीत है। इसमें लोदवा की राजकुमारी मूमल के नख-शिख सौंदर्य का वर्णन है।
- **सुवटिया (Suvatiya):** भील महिला द्वारा अपने पति को तोते (सुवा) के माध्यम से संदेश भेजते समय गाया जाने वाला विरह गीत।
- **झोरावा (Jhorava):** जैसलमेर में किसी की याद में गाया जाने वाला गीत।

B. संस्कार और उत्सव संबंधी गीत:

- **जच्चा (Jacha):** पुत्र जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला गीत (इसे 'होलर' भी कहते हैं)।
- **काजलियो:** विवाह के अवसर पर वर की आँखों में भाभी द्वारा काजल डालते समय।
- **बना-बनी:** दूल्हा-दुल्हन की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत।
- **ओल्यू (Olyun):** बेटी की विदाई के समय उसकी याद में गाया जाने वाला मर्मस्पर्शी गीत।

C. अन्य प्रसिद्ध गीत:

- **गोरबंद (Gorbandh):** ऊँट के गले के आभूषण 'गोरबंद' को गुँथते समय गाया जाने वाला गीत (शेखावाटी व मारवाड़ क्षेत्र)।
- **हिचकी (Hichki):** मेवात क्षेत्र (अलवर) का प्रसिद्ध गीत। जब किसी की याद आती है, तो 'हिचकी' गीत गाया जाता है।
- **पंछीड़ा (Panchida):** माणिक्य लाल वर्मा द्वारा हाड़ौती और ढूँढाड़ क्षेत्र के किसानों में जोश भरने हेतु रचित गीत।

2. राजस्थानी कहावतें और पहेलियाँ

- **कहावतें (Proverbs):** इन्हें राजस्थानी में 'कहाण' या 'बातां' कहा जाता है। ये जीवन के अनुभवों का निचोड़ होती हैं।
 - उदाहरण: "जाट कहै रे जाटणी, आ ई बातां देख" (अनुभव का महत्व)।
- **पहेलियाँ (Riddles):** इन्हें स्थानीय भाषा में 'आड़ी' या 'अखाणा' कहा जाता है। ये बुद्धि चातुर्य और मनोरंजन का प्रमुख साधन हैं।
 - उदाहरण: "एक थार मोत्यां भरयो, सबके सिर पर औँधा धरयो" (उत्तर: आकाश)।

3. फड़ साहित्य (Phad Literature)

फड़ केवल एक चित्रकला नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण 'दृश्य-श्रव्य लोक महाकाव्य' (Audio-Visual Folk Epic) है।

- **स्वरूप:** लंबे कपड़े पर लोक देवताओं के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रांकन होता है।
- **वाचन परंपरा:** फड़ का वाचन भोपा-भोपी द्वारा विशिष्ट वाद्यों (जैसे रावणहत्था, जंतर) के साथ किया जाता है।
- **साहित्यिक महत्व:** फड़ के साथ गाए जाने वाले 'पवाड़े' (Pavadhe) वीर रस का लोक साहित्य हैं।
 - **पाबूजी के पवाड़े:** माठ वाद्य के साथ गाए जाते हैं।
 - **देवनारायण जी की फड़:** यह सबसे लंबी गाथा वाला लोक साहित्य है।

4. लोक कथाएँ (Folk Tales/Vaat)

राजस्थानी लोक साहित्य में 'वात' (कहानी) कहने की समृद्ध परंपरा है।

- **नीतिपरक कथाएँ:** पंचतंत्र की तरह पशु-पक्षियों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा।
- **प्रेमाख्यान:** ढोला-मारू, जेठवा-ऊजली, सदयवत्स-सांवलिंगा। ये कथाएँ मौखिक रूप से पीढ़ियों से चली आ रही हैं।
- **धार्मिक कथाएँ:** लोक देवताओं (रामदेव जी, गोगाजी) के 'ब्यावले' या 'परचे'।

5. विश्लेषण: लोक साहित्य का 'स्मृति संचयन' कार्य

राजस्थानी लोक साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक 'अनौपचारिक विश्वविद्यालय' है। जहाँ 'डिंगल-पिंगल' साहित्य दरबारी सीमाओं में बंधा था, वहीं लोक साहित्य (गीत, कहावतें) आम आदमी के सुख-दुख और सामाजिक मूल्यों को सुरक्षित रखता है। 'कूर्जा' या 'सुवटिया' जैसे गीत मरुस्थलीय भूगोल और पलायन की मजबूरी को दर्शाते हैं। फड़ साहित्य यह सिद्ध करता है कि राजस्थान में 'चित्र' और 'शब्द' का समन्वय कितना प्राचीन और प्रभावी है। यह साहित्य राजस्थानी भाषा की बोलियों को जीवंत बनाए रखने का सबसे बड़ा आधार है।

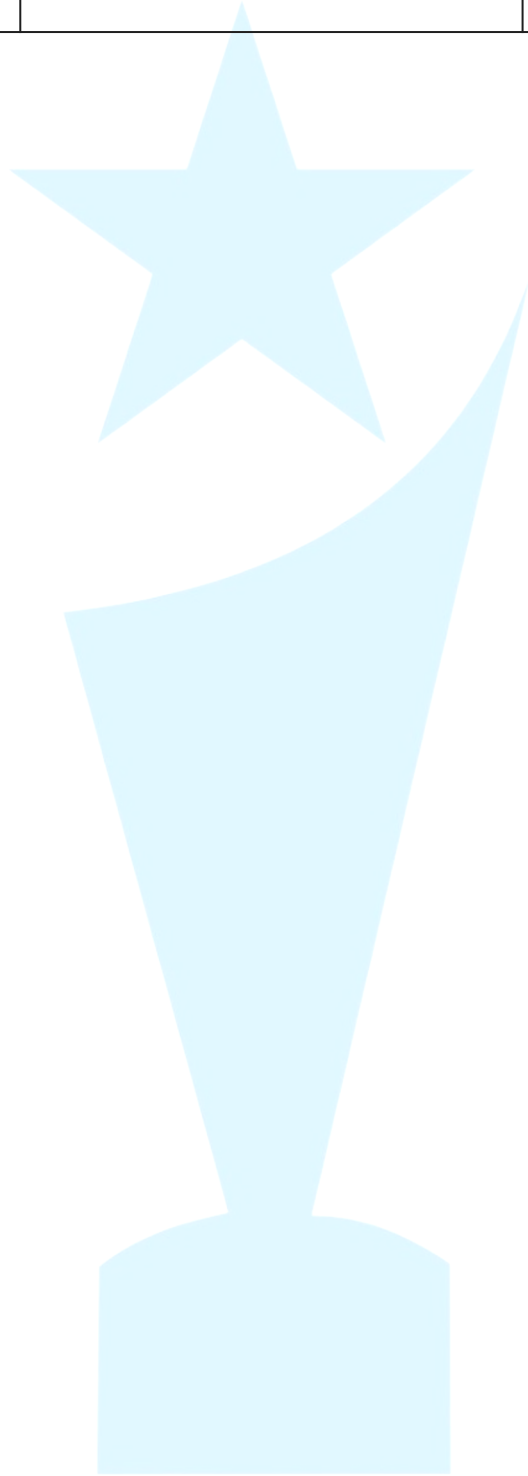
6. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य: मांड गायकी** राजस्थान के लोकगीतों का सबसे परिष्कृत और शास्त्रीय रूप है, जो अब विश्व स्तर पर विख्यात है।
- **नोट: कोमल कोठारी** ने 'रुपायण संस्थान' के माध्यम से विलुप्त हो रहे लोक गीतों और वाद्य यंत्रों का अद्भुत दस्तावेजीकरण किया है।
- कुछ विद्वान फड़ को केवल 'कला' मानते हैं, परंतु भाषाविदों के अनुसार फड़ के साथ गाई जाने वाली गाथाएँ 'लोक महाकाव्य' (Oral Epics) की श्रेणी में आती हैं।

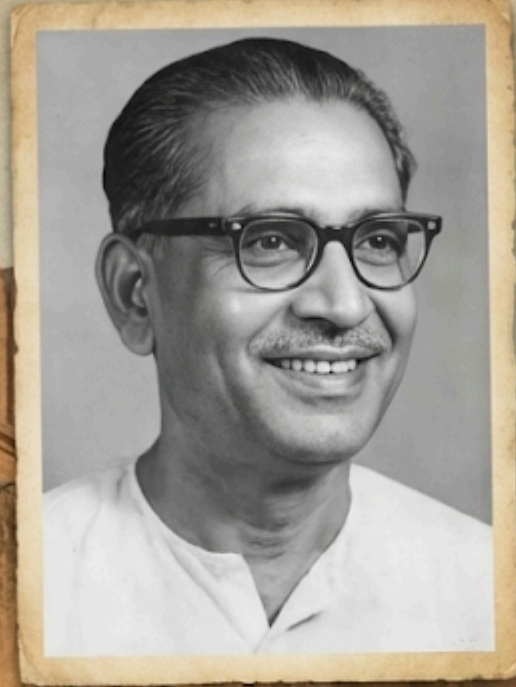
7. तालिका (Quick Reference)

विधा	प्रमुख उदाहरण	क्षेत्र / विशेषता
विरह गीत	कूर्जा, सुवटिया	संदेशवाहक गीत।
सौंदर्य गीत	मूमल	जैसलमेर (लोद्रवा)।
पहेलियाँ	आड़ी / अखाणा	बुद्धि परीक्षण।
लोक गाथा	पाबूजी के पवाड़े	वीर रस, माठ वाद्य।

आधुनिक लोक गीत	पंछीड़ा	किसानों का प्रेरणा गीत।
----------------	---------	-------------------------



wincompete



1. कन्हैयालाल सेठिया: राजस्थानी भाषा के 'भीष्म पितामह' (ऐतिहासिक फोटो)।



2. विजयदान देथा 'बिज्जी': लोक कथाओं पर आधारित सिनेमा (पोस्टर कला)।



5. साहित्य अकादमी पुरस्कार (प्रतीक)।



3. रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत: लोक गाथाओं की संरक्षिका (पोट्रेट)।



4. कोमल कोठारी और रूपांयण संस्थान: लोक कलाओं का संरक्षण केंद्र (फोटो)।

बिंदु 2: राजस्थानी भाषा: बोलियाँ और साहित्य

अध्याय 9: राजस्थानी साहित्य के आधुनिक हस्ताक्षर

यह सामग्री डॉ. किरण नाहटा, डॉ. चंद्रप्रकाश देवल और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य' शोध संकलनों पर आधारित है।

1. कन्हैयालाल सेठिया: शब्द और माटी के चितेरा

चूरू के सुजानगढ़ में जन्मे सेठिया जी को राजस्थानी भाषा का '**भीष्म पितामह**' कहा जाता है। उन्होंने अपनी ओजस्वी लेखनी से राजस्थानी अस्मिता को स्वर दिया।

- **पाथल और पीथल (Pathal aur Pithal):** यह उनकी कालजयी रचना है। इसमें '**पाथल**' शब्द महाराणा प्रताप के लिए और '**पीथल**' शब्द बीकानेर के राजकुमार व कवि पृथ्वीराज राठौड़ के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह कविता स्वतंत्रता और स्वाभिमान का जीवंत दस्तावेज है।
- **धरती धोरां री (Dharti Dhoran Ri):** इस कविता को राजस्थान का 'सांस्कृतिक राष्ट्रगान' माना जाता है। इसमें राजस्थान के प्राकृतिक सौंदर्य और गौरवशाली इतिहास का वर्णन है।
- **लीलतांस (Liltans):** इस कृति हेतु उन्हें 1976 में **साहित्य अकादमी पुरस्कार** प्राप्त हुआ। (लीलतांस पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है)।
- **अन्य कृतियाँ:** *मिंझर, कुंकुं, सब्द, कणी-कणी में राजस्थान।*

2. विजयदान देथा 'बिज्जी': लोक कथाओं के जादूगर

जोधपुर के बोरुंदा गाँव में जन्मे 'बिज्जी' ने राजस्थानी लोक कथाओं को वह साहित्यिक ऊँचाई प्रदान की कि उन्हें **नोबेल पुरस्कार** के लिए नामांकित किया गया।

- **बातां री फुलवारी (Batan ri Phulwari):** यह 14 खंडों में विभक्त लोक कथाओं का एक विशाल संग्रह है, जिसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
- **सिनेमा और साहित्य:** उनकी रचनाओं पर कई प्रसिद्ध फिल्मों बनी हैं:
 - **दुविधा:** (अमोल पालेकर द्वारा निर्देशित)।
 - **पहेली:** (शाहरुख खान अभिनीत)।
 - **चरणदास चोर:** (हबीब तनवीर का नाटक)।
- **अन्य कृतियाँ:** *अलेखूँ हिटलर, तिड़ो राव, सपन प्रिया।*

3. रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत: सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षिका

मेवाड़ के देवगढ़ राजघराने से संबंधित रानी जी ने सामंती परिवेश से निकलकर लोक जीवन की कहानियों को लिपिबद्ध किया।

- **प्रमुख कार्य:** उन्होंने मौखिक रूप से प्रचलित लोक गाथाओं (जैसे- बगड़ावत देवनारायण महागाथा) को साहित्यिक रूप दिया।
- **प्रमुख कृतियाँ:**
 - **मूमल (Moomal):** जैसलमेर की राजकुमारी और अमरकोट के महेंद्र की प्रेम कहानी का साहित्यिक प्रस्तुतीकरण।
 - **गीर ऊँचा गढ़ ऊँचा, माँझल रात, टाबरां री बातां।**
- **सम्मान:** उन्हें पद्मश्री और राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया।

4. कोमल कोठारी 'कोमल दा': लोक कलाओं के उद्धारक

कोमल कोठारी ने साहित्य के साथ-साथ लोक संगीत और वाद्य यंत्रों के संरक्षण में जो कार्य किया, वह विश्व स्तर पर अद्वितीय है।

- **रूपांयण संस्थान (Rupayan Sansthan):** 1960 में उन्होंने विजयदान देथा के साथ मिलकर **बोरुंदा (जोधपुर)** में इस संस्थान की स्थापना की।
- **उद्देश्य:** विलुप्त होती लोक कलाओं, लोक संगीत (लंगा-मांगणियार) और हस्तशिल्प का दस्तावेजीकरण करना।

- **पत्रिका:** इन्होंने 'मरु चक्र' पत्रिका का संपादन किया।
- **सम्मान:** पद्म भूषण और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।

5. अन्य आधुनिक साहित्यकार (Quick Scan)

- **मेघराज मुकुल:** इनकी कविता 'सैनाणी' (चूड़ावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी) राजस्थान में त्याग और वीरता का प्रतीक है।
- **यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र':** आधुनिक राजस्थानी उपन्यासकार। प्रमुख कृतियाँ: हूँ गोरी किण पीव री, जोग संजोगा
- **अर्जुन देव चारण:** आधुनिक नाटककार। प्रमुख कृति: धरम जुद्ध
- **नारायण सिंह भाटी:** सांझ, बरसां रा डिगोड़ा डूंगर लांधिया।

6. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: आधुनिक राजस्थानी साहित्य की दिशा

आधुनिक राजस्थानी साहित्य का काल (1850 के बाद) केवल राजाओं की प्रशंसा का काल नहीं रहा। कन्हैयालाल सेठिया ने जहाँ 'धरती धोरां री' के माध्यम से क्षेत्रीय गौरव को जगाया, वहीं विजयदान देथा ने लोक कथाओं के माध्यम से सामंती बुराइयों और मानवीय मनोविज्ञान पर चोट की। कोमल कोठारी का योगदान यह रहा कि उन्होंने साहित्य को 'शब्द' से निकालकर 'संगीत और शिल्प' के साथ जोड़ा, जिससे राजस्थान की मौखिक परंपरा अंतरराष्ट्रीय शोध का विषय बनी। यह कालखंड राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के संघर्ष का भी साक्षी है।

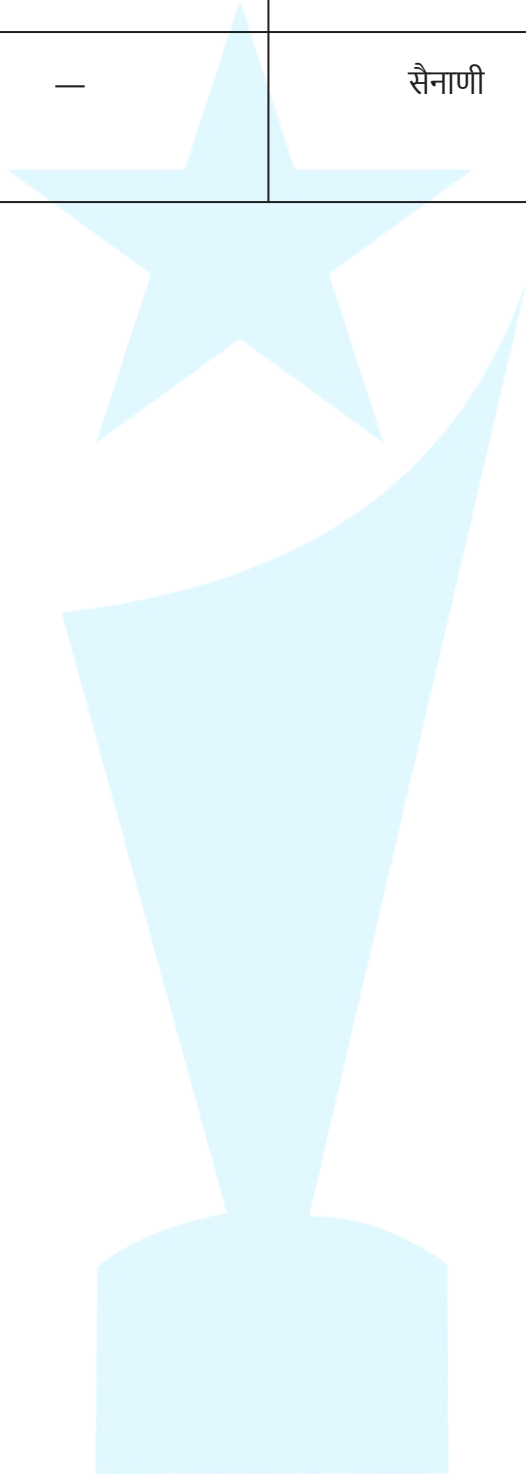
7. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** मेघराज मुकुल की कविता 'सैनाणी' बूंदी के सरदार राव रतन सिंह की रानी सहिल कंवर के बलिदान पर आधारित है।
- **नोट:** मुनि जिनविजय और दशरथ शर्मा ने ऐतिहासिक साहित्य के संपादन और विश्लेषण में आधुनिक पद्धति का सूत्रपात किया।
- **विरोधाभास:** कुछ आलोचक विजयदान देथा की रचनाओं को 'मार्क्सवादी' प्रभाव वाली मानते हैं, परंतु बिज्जी स्वयं इसे 'मिट्टी की सहज अभिव्यक्ति' कहते थे।

8. तालिका (Quick Reference)

साहित्यकार	उपनाम / पहचान	प्रमुख कृति	विशिष्टता
कन्हैयालाल सेठिया	शब्द शिरोमणि	लीलतांस, पाथल-पीथल	राजस्थानी अस्मिता के कवि।
विजयदान देथा	बिज्जी	बातां री फुलवारी	लोक कथाओं को वैश्विक मंच दिया।
लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत	रानी जी	मूमल, बगड़ावत	लोक गाथाओं का संकलन।

कोमल कोठारी	कोमल दा	मरु चक्र (पत्रिका)	रूपायण संस्थान के संस्थापक।
मेघराज मुकुल	—	सैनाणी	क्षत्राणी के बलिदान का वर्णन।

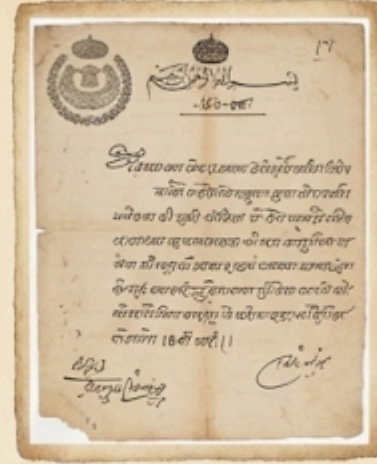


wincompete

अध्याय 10: राजस्थानी लोक साहित्य - मुहावरे, लोकोक्तियाँ और शब्दावली (एक झलक)



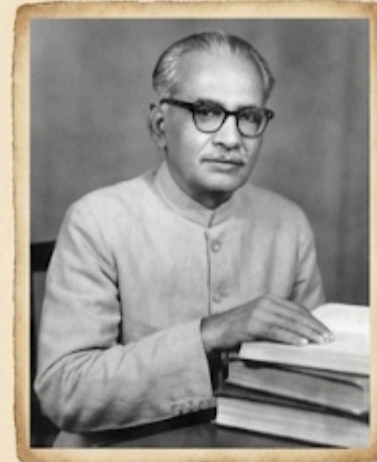
1. 'अकल बिना ऊंट उभाणा फिरै': थार के जीवन-दर्शन का प्रतीक (ऐतिहासिक फोटो)।



2. 'खास-रुक्का': राजा का हस्तलिखित विशेष आदेश (शाही दस्तावेज, 18वीं सदी)।



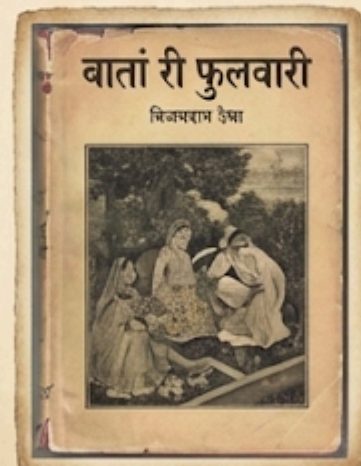
3. 'मिसल': दरबार में सामंतों के बैठने का निर्धारित क्रम (लघुचित्र)।



4. डॉ. कन्हैयालाल सहल: राजस्थानी कहावतों के विशेषज्ञ (पोट्रेट)।



5. कृषि कहावतें: 'तीतर पंखी बादळी, विधवा काजल रेख' (मानसून का दृश्य)।



6. 'बातां री फुलवारी': लोक कथाओं और मुहावरों का खजाना (पुस्तक आवरण)।

बिंदु 2: राजस्थानी भाषा: बोलियाँ और साहित्य

अध्याय 10: राजस्थानी लोक साहित्य: मुहावरे, लोकोक्तियाँ और साहित्यिक शब्दावली

यह सामग्री डॉ. कन्हैयालाल सहल (राजस्थानी कहावतों के विशेषज्ञ), डॉ. मनोहर शर्मा और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थानी कहावत कोश' पर आधारित है।

1. राजस्थानी लोकोक्तियाँ (Proverbs): लोक-अनुभव का सार

लोकोक्तियाँ (कहावतें) समाज के सदियों पुराने अनुभवों का संक्षिप्त रूप होती हैं। राजस्थानी में इन्हें 'आखाणा' या 'बातां' भी कहा जाता है।

लोकोक्ति (कहावत)	अर्थ / भावार्थ
अकल बिना ऊंट उभाणा फिरै	बुद्धि के अभाव में सामर्थवान व्यक्ति भी कष्ट पाता है।
टाबर का पग पालणा में ही दीख जावे	होनहार व्यक्ति के लक्षण बचपन में ही प्रकट हो जाते हैं।
जीवणो थोड़ो और जंजाल घणो	जीवन छोटा है परंतु सांसारिक समस्याएँ बहुत अधिक हैं।
घर आयो नाग न पूजै, बांमी पूजण जावे	उपलब्ध अवसर का लाभ न उठाकर दूर की वस्तु के पीछे भागना।
भैस के आगे भागवत बांचणी	मूर्ख व्यक्ति को ज्ञान देना व्यर्थ है।

2. राजस्थानी मुहावरे (Idioms): भाषा की शक्ति

राजस्थानी मुहावरे अपनी मारक क्षमता और व्यंग्य के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्हें स्थानीय स्तर पर 'ओळखाणा' भी कहा जाता है।

- **आँख्याँ मिचावणी:** उपेक्षा करना या ध्यान न देना।
- **कांदो काढ़णो:** किसी कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करना या अंत करना।
- **टाँग अड़ावणी:** अनावश्यक हस्तक्षेप करना।
- **जी रो जंजाल:** अत्यधिक चिंता का विषय बनना।
- **पग पाछा खैचणा:** भयभीत होकर पीछे हट जाना।
- **हाथ को मेल:** तुच्छ वस्तु या धन (जो स्थायी न हो)।

3. विशिष्ट साहित्यिक एवं ऐतिहासिक शब्दावली (Exam Special)

परीक्षाओं (विशेषकर RAS मुख्य परीक्षा) में पारिभाषिक शब्दावली का बहुत महत्व है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण मध्यकालीन राजस्थानी शब्द दिए गए हैं:

- **धवाड़िया (Dhavadia):** पुराने समय में मार्ग में राहगीरों और काफिलों को लूटने वाले गिरोह।
- **खास-रुक्का (Khas-Ruqqa):** राजा द्वारा अपने हाथ से लिखा गया विशेष पत्र या आदेश।
- **मिसल (Misal):** दरबार में सामंतों के बैठने का निर्धारित क्रम या श्रेणी।
- **ओळजी (Olji):** वह व्यक्ति जिसे किसी समझौते या संधि की गारंटी के रूप में बंधक रखा जाता था।
- **पासीब (Pashiv):** किले की घेराबंदी के समय दीवार तक पहुँचने के लिए बनाया गया ऊँचा चबूतरा।
- **बिणजारा (Binjara):** अनाज और आवश्यक वस्तुओं का व्यापार करने वाला घुमंतू समुदाय।

4. कृषि एवं मौसम संबंधी कहावतें (Agricultural Wisdom)

राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मानसून पर टिकी है, इसलिए मौसम से संबंधित कहावतें यहाँ के लोक-साहित्य का अभिन्न अंग हैं:

- **तीतर पंखी बादळी, विधवा काजल रेख:** (यदि बादल तीतर के पंख के समान हों, तो वर्षा अवश्य होगी)।
- **सावण में सुरयो चालै, तो अकाल रो लक्षण:** (यदि सावण में उत्तर-पश्चिमी हवा चले, तो अकाल की संभावना होती है)।

5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: लोक साहित्य का मनोवैज्ञानिक पक्ष

राजस्थानी मुहावरे और लोकोक्तियाँ केवल शब्द नहीं, बल्कि 'थार' के मरुस्थल की कठोर जीवनशैली से उपजा जीवन-दर्शन हैं। इनमें ऊँट, नाग, धूल और अकाल जैसे प्रतीकों का प्रयोग यह दर्शाता है कि यहाँ का साहित्य भूगोल से कितना प्रभावित है। जहाँ डिंगल-पिंगल का लिखित साहित्य विशिष्ट वर्ग तक सीमित था, वहीं ये मुहावरे 'लोक-संस्कृति' के प्रहरी बने रहे। ये न केवल भाषा को प्रवाह प्रदान करते हैं, बल्कि नई पीढ़ी को नैतिक मूल्यों और व्यावहारिक चतुराई की शिक्षा भी देते हैं।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य: डॉ. कन्हैयालाल सहल** को राजस्थानी लोकोक्तियों के संकलन और उनके वैज्ञानिक विश्लेषण का पितामह माना जाता है।
- **नोट: बातां री फुलवारी** (विजयदान देथा) में इन मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रचुर और कलात्मक प्रयोग देखने को मिलता है।
- **विरोधाभास:** कुछ मुहावरे समय के साथ अपना अर्थ बदल लेते हैं, जैसे 'आँखियाँ मिचावणी' का प्रयोग मृत्यु के संदर्भ में भी होता है और लापरवाही के संदर्भ में भी, अतः वाक्य प्रयोग के आधार पर इनका अर्थ रक्षात्मक (Defensible) होना चाहिए।

wincompete

7.तालिका (Quick Reference)

शब्द / विधा	अर्थ / केंद्र	विशेष टिप्पणी
आखाणा	लोकोक्ति / कहावत	लोक अनुभवों का संकलन।
मिसल	दरबारी बैठने का क्रम	सामंती मर्यादा का प्रतीक।
खास-रुक्का	शाही हस्तलिखित पत्र	अत्यंत गोपनीय आदेश।
धवाड़िया	लुटेरे / धाड़वी	ऐतिहासिक सुरक्षा व्यवस्था का संदर्भ।
सोरठा	डिंगल का छंद	मारवाड़ी काव्य की विशिष्टता।

wincompete

अध्याय 11: राजस्थान के प्रमुख लोक देवता - पंचपीर (एक ऐतिहासिक झलक)



1. रामदेवरा मंदिर (रूणीचा): सांप्रदायिक सद्भाव का केंद्र (वर्तमान फोटो)।



2. पाबूजी राठौड़: केसर कालमी घोड़ी पर सवार ऊँटों के देवता (19वीं सदी की पेंटिंग)।



3. गोगामेड़ी (धुर मेड़ी): मकबरेनुमा बनावट जहाँ 'बिस्मिल्लाह' अंकित है (वास्तविक फोटो)।



4. पाबूजी की फड़ वाचन: रावणहत्था वाद्य के साथ भोपा (सांस्कृतिक फोटो)।



5. हड़बूजी की गाड़ा (बैलगाड़ी): बेंगटी में मूर्ति के स्थान पर पूजनीय (धार्मिक स्थल फोटो)।



6. गोगाजी का युद्ध: गजनवी के विरुद्ध वीरता, 'जाहरपीर' की उपाधि (ऐतिहासिक चित्रण)।

बिंदु 3: धार्मिक जीवन: संत, संप्रदाय और लोक देवता/देवियाँ

अध्याय 11: राजस्थान के प्रमुख लोक देवता: पंचपीर

1. पंचपीर: एक परिचय

मारवाड़ अंचल में एक प्रसिद्ध दोहा प्रचलित है—

"पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेहा।

पांचों पीर पधारज्या, गोगाजी जेहा।।"

इन पाँच देवताओं (पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मांगलिया मेहाजी और गोगाजी) को 'पंचपीर' कहा जाता है। ध्यान रहे, **तेजाजी** पंचपीरों में शामिल नहीं हैं (RPSC का अक्सर पूछा जाने वाला प्रश्न)।

2. रामदेवजी (रूणीचा रा धणी)

रामदेवजी राजस्थान के सबसे शक्तिशाली और सामाजिक समरसता के प्रतीक लोक देवता हैं।

- **जन्म:** उंडू-कासमेर गाँव (शिव तहसील, बाड़मेर)। वे तंवर वंशीय राजपूत थे।
- **माता-पिता:** अजमल जी तंवर और मैणादे।
- **गुरु:** बालीनाथ जी (मसूरिया पहाड़ी, जोधपुर)।
- **चमत्कार (परचा):** उन्होंने भैरव राक्षस का वध कर पोकरण क्षेत्र को भयमुक्त किया। मक्का से आए पाँच पीरों को अपनी शक्ति दिखाई, जिसके बाद उन्होंने कहा— "मैं तो केवल पीर हूँ, थे पीरां रा पीर हो।"
- **विशेषताएँ:**
 - वे एकमात्र लोक देवता हैं जो **कवि** भी थे। उनकी रचना '**चौबीस बाणियाँ**' प्रसिद्ध है।
 - उन्होंने '**कामड़िया पंथ**' की स्थापना की। इस पंथ की महिलाएँ 'तेरहताली नृत्य' करती हैं।
 - **प्रतीक चिन्ह:** पगल्ये (चरण चिन्ह)।
 - **ध्वजा:** नेजा (पंचरंगी पताका)।
 - **मेला:** भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (बाबे री बीज) से एकादशी तक रूणीचा (जैसलमेर) में। इसे 'मारवाड़ का कुंभ' कहा जाता है।

3. पाबूजी (ऊँटों के देवता)

पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार और प्लैग रक्षक देवता माना जाता है।

- **जन्म:** कोलूमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर)। धांधल जी राठौड़ के पुत्र।
- **प्रतीक:** हाथ में भाला और बाईं ओर झुकी हुई पाग (पगड़ी)।
- **प्रमुख कार्य:** उन्होंने देवल चारणी की गायों को छुड़ाने के लिए अपने विवाह के फेरे बीच में ही छोड़ दिए और जींदराव खींची (जायल) के विरुद्ध युद्ध करते हुए **ढेचू गाँव** में वीरगति प्राप्त की।
- **विशेष तथ्य:**
 - मारवाड़ में सर्वप्रथम **ऊँट (साँड)** लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
 - ऊँट के बीमार होने पर पाबूजी की 'फड़' बांची जाती है।
 - **वाद्य यंत्र:** पाबूजी की फड़ 'रावणहल्था' के साथ और पवाड़े 'माठ' वाद्य के साथ गाए जाते हैं।

4. गोगाजी (जाहरपीर)

गोगाजी सांपों के देवता और गौरक्षक के रूप में पूजे जाते हैं।

- **जन्म:** ददरेवा (चूरू)। जेवर सिंह और बाछल दे के पुत्र।
- **उपाधि:** महमूद गजनवी से युद्ध करते समय उनकी वीरता देखकर गजनवी ने उन्हें '**जाहरपीर**' (साक्षात देवता) कहा।
- **प्रमुख स्थल:**
 - **शीर्ष मेड़ी:** ददरेवा (चूरू), जहाँ युद्ध के दौरान उनका सिर गिरा।
 - **धुर मेड़ी (गोगामेड़ी):** नोहर (हनुमानगढ़), जहाँ उनका धड़ गिरा। इसकी बनावट मकबरेनुमा है और इस पर 'बिस्मिल्लाह' अंकित है।
- **मेला:** भाद्रपद कृष्ण नवमी (गोगा नवमी)।
- **प्रतीक:** पत्थर पर अंकित सर्प। इनका 'थान' प्रायः **खेजड़ी** वृक्ष के नीचे होता है।

5. हड़बूजी (शकुन शास्त्र के ज्ञाता)

हड़बूजी रामदेवजी के मौसेरे भाई थे और सांख्य दर्शन व शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।

- **जन्म:** भुंडेल (नागौर)। सांखला राजपूत।
- **ऐतिहासिक संबंध:** उन्होंने **राव जोधा** को मेवाड़ की गुलामी से मुक्त होने का आशीर्वाद दिया और एक कटार भेंट की। मंडोर विजय के बाद जोधा ने उन्हें **बेंगटी (फलोदी)** गाँव प्रदान किया।
- **पूजा:** बेंगटी में हड़बूजी के मंदिर में उनकी मूर्ति के स्थान पर उनकी '**गाड़ा (बैलगाड़ी)**' की पूजा की जाती है, जिससे वे अपंग गायों के लिए चारा लाते थे।

6. मांगलिया मेहाजी

मेहाजी एक अत्यंत स्वाभिमानी योद्धा और मर्यादा के रक्षक थे।

- **जन्म:** बापणी (जोधपुर)।
- **वीरगति:** जैसलमेर के शासक राणंगदेव भाटी के विरुद्ध युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की।
- **घोड़ा:** इनके प्रिय घोड़े का नाम '**किरड़ काबरा**' था।
- **मेला:** भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी के दिन)।
- **विशेष मान्यता:** इनके भोपों (पुजारियों) के वंश की वृद्धि नहीं होती, वे गोद लेकर वंश चलाते हैं।

7. विश्लेषण: पंचपीर और सामुदायिक एकता का सूत्र

राजस्थान के पंचपीर मध्यकालीन समाज की उन चुनौतियों का उत्तर थे, जहाँ धर्म और जाति के नाम पर विभाजन गहरा था। रामदेवजी ने अछूतोद्धार और कामड़िया पंथ के माध्यम से ऊँच-नीच को मिटाया, तो गोगाजी और पाबूजी ने गौरक्षा के लिए प्राण देकर क्षत्रिय धर्म को परिभाषित किया। इन पीरों की पूजा पद्धति में हिंदू और मुस्लिम दोनों का समावेश यह दर्शाता है कि 'लोक' हमेशा 'शास्त्र' से अधिक उदार होता है। यही कारण है कि गोगामेड़ी के मंदिर में एक हिंदू पुजारी और एक मुस्लिम (चायल) पुजारी की परंपरा आज भी कायम है।

8. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** गोगाजी के घोड़े का रंग नीला था, जिसे '**गोगा बप्पा**' कहा जाता है।
- **नोट:** पाबूजी की फड़ राजस्थान की **सबसे लोकप्रिय** फड़ है।
- कुछ ग्रंथों में मेहाजी को पंचवार वंशीय राजपूत बताया गया है, लेकिन मांगलिया जाति में पालन-पोषण होने के कारण वे मांगलिया मेहाजी के नाम से विख्यात हुए।

wincompete

9. तालिका: पंचपीर

लोक देवता	मुख्य स्थान	प्रतीक / वाहन	विशेष कार्य
रामदेवजी	रूणीचा (जैसलमेर)	पगल्ये / नीला घोड़ा	सांप्रदायिक सद्भाव, अछूतोद्धार।
पाबूजी	कोलूमण्ड (फलोदी)	भाला / केसर कालमी घोड़ी	ऊँटों के रक्षक, गौरक्षा।
गोगाजी	गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)	सर्प / नीला घोड़ा	जाहरपीर, सर्पदंश रक्षक।
हड़बूजी	बेंगटी (फलोदी)	बैलगाड़ी	शकुन शास्त्र, राव जोधा के सहायक।
मेहाजी	बापणी (जोधपुर)	किरड़ काबरा घोड़ा	भाटी शासकों से युद्ध।

wincompete

अध्याय 12: अन्य महत्वपूर्ण लोक देवता - वीरगाथा और जन-आस्था के प्रतीक



1. वीर तेजाजी का मंदिर (सुरसुरा): सर्पदंश और वीरगति का स्थल (वर्तमान फोटो)।



2. देवनारायण जी की पूजा: ईंटों और नीम की पत्तियों का महत्व (धार्मिक स्थल फोटो)।



3. वीर कल्लाजी राठौड़: चित्तौड़ के तीसरे साके में 'चार हाथ वाले देवता' का युद्ध (ऐतिहासिक पेंटिंग)।



4. देवनारायण जी की फड़: राजस्थान की सबसे लंबी और प्राचीन लोक गाथा (कलाकृति फोटो)।



5. मल्लीनाथ पशु मेला (तिलवाड़ा): लूणी नदी के तट पर प्राचीनतम मेला (सांस्कृतिक फोटो)।



6. तल्लीनाथ जी का ओरण (पांचीटा): प्रकृति संरक्षण का प्रतीक (वर्तमान फोटो)।

बिंदु 3: धार्मिक जीवन: संत, संप्रदाय और लोक देवता/देवियाँ

अध्याय 12: अन्य महत्वपूर्ण लोक देवता (तेजाजी, देवनारायण जी, कल्लाजी आदि)

1. वीर तेजाजी (काला और बाला के देवता)

तेजाजी राजस्थान के सबसे लोकप्रिय लोक देवताओं में से एक हैं, विशेषकर अजमेर और नागौर अंचल में।

- **जन्म:** खड़नाल (नागौर) में धौलिया वंशीय जाट परिवार में (1074 ई.)।
- **माता-पिता:** ताहड़ जी और रामकुंवरी। पत्नी: पेमल दे।
- **प्रमुख कार्य (गौरक्षा):** तेजाजी ने लाछा गूजरी की गायों को मेर के मीणाओं से छुड़ाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी।
- **सर्पदंश और वीरगति:** वचनानुसार उन्होंने सांप (बाँसक) को अपनी जीभ पर डसने दिया। उनकी मृत्यु **सुरसुरा (अजमेर)** में हुई।
- **विशेषताएँ:**
 - उन्हें 'काला और बाला' का देवता तथा 'कृषि कार्यों का उपकारक देवता' कहा जाता है।
 - किसान खेत जोतने से पहले 'तेजा टेर' (गायन) करते हैं।
 - **प्रतीक:** हाथ में तलवार लिए अश्वारोही योद्धा, जिनकी जीभ पर सर्प डस रहा है।
- **पशु मेला:** पर्वतसर (नागौर) में भाद्रपद शुक्ल दशमी (**तेजा दशमी**) को राजस्थान का आय की दृष्टि से सबसे बड़ा पशु मेला लगता है।

2. देवनारायण जी (विष्णु के अवतार)

देवनारायण जी गुर्जर समाज के आराध्य देव हैं और उन्हें आयुर्वेद का ज्ञाता माना जाता है।

- **जन्म:** गोठा-दड़ावत (आसींद, भीलवाड़ा)। वे बगड़ावत वंशीय गुर्जर थे।
- **विशेषता:** उन्होंने औषधि के रूप में **नीम की पत्तियों** का महत्व बताया। उनके मंदिर में मूर्ति के स्थान पर **ईंटों की पूजा** की जाती है और नीम की पत्तियां चढ़ाई जाती हैं।
- **फड़ साहित्य और डाक टिकट:**
 - देवनारायण जी की फड़ राजस्थान की **सबसे पुरानी, सबसे लंबी और सबसे छोटी** फड़ है।
 - इसका वाचन गुर्जर भोपों द्वारा 'जंतर' वाद्य के साथ किया जाता है।
 - **डाक टिकट:** वर्ष 1992 में उनकी फड़ पर और 2011 में स्वयं देवनारायण जी पर 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।
- **प्रमुख स्थल:** सवाई भोज (आसींद), देवमाली (ब्यावर), देवधाम जोधपुरिया (टोंक)।

3. वीर कल्लाजी राठौड़ (चार हाथ वाले देवता)

कल्लाजी राठौड़ अपनी अद्भुत वीरता और त्याग के लिए 'लोक देवता' के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** कल्लाजी चित्तौड़गढ़ के तीसरे साके (1567-68) में अकबर के विरुद्ध युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- **चार हाथ वाले देवता:** युद्ध भूमि में जब उनके चाचा जयमल राठौड़ घायल हो गए, तो कल्लाजी ने उन्हें अपने कंधों पर बिठाकर युद्ध किया। दो हाथ जयमल के और दो कल्लाजी के, इस दृश्य को देखकर उन्हें '**चार हाथ और दो सिर वाले देवता**' कहा गया।
- **सिद्धपीठ:** सामलिया (डूंगरपुर)। यहाँ उनकी काले पत्थर की मूर्ति है जहाँ अफीम और केसर चढ़ाया जाता है।
- **विशेषता:** उन्हें 'शेषनाग का अवतार' भी माना जाता है।

4. मल्लीनाथ जी और तल्लीनाथ जी

- **मल्लीनाथ जी:**
 - मारवाड़ के प्रतापी शासक। उन्होंने फिरोज तुगलक और मालवा के सूबेदार की सेना को परास्त किया।
 - **प्रमुख स्थल:** तिलवाड़ा (बाड़मेर), जहाँ लूणी नदी के तट पर चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक राजस्थान का **सबसे प्राचीन पशु मेला** लगता है।
 - इन्हीं के नाम पर बाड़मेर के क्षेत्र को 'मालानी' कहा जाता है।
- **तल्लीनाथ जी:**

- इनका वास्तविक नाम **गांगदेव राठौड़** था। ये शेरगढ़ (जोधपुर) के शासक थे।
- **प्रमुख स्थल:** पांचौटा गाँव (जालौर) की 'पंचमुखी पहाड़ी'। इन्हें जालौर अंचल का मुख्य लोक देवता माना जाता है।
- **विशेषता:** वे प्रकृति प्रेमी थे। उनके मंदिर के आस-पास की भूमि को '**ओरण**' कहा जाता है, जहाँ से पेड़ काटना वर्जित है।

5. विश्लेषण: गौरक्षा और औषधीय ज्ञान का लोक-समावेश

राजस्थान के लोक देवताओं का उदय केवल धार्मिक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा और पारिस्थितिक संतुलन के लिए हुआ। तेजाजी ने 'वचनबद्धता' और 'गौरक्षा' के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया, जो आज भी राजस्थानी नैतिकता का आधार है। वहीं देवनारायण जी का नीम की पत्तियों और आयुर्वेद पर बल देना यह सिद्ध करता है कि लोक देवता प्राचीन काल के 'लोक चिकित्सक' भी थे। कल्लाजी राठौड़ की 'चार हाथ' वाली छवि वीरता की उस पराकाष्ठा का प्रतीक है जहाँ व्यक्ति अपनी सीमाओं से ऊपर उठकर धर्म की रक्षा करता है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** झरड़ा जी (पाबूजी के भतीजे) को हिमाचल प्रदेश में 'बालकनाथ' के रूप में पूजा जाता है।
- **नोट:** भूरिया बाबा (गौतमेश्वर) मीणा जनजाति के आराध्य देव हैं, जिनकी मीणा जाति कभी झूठी कसम नहीं खाती।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में मल्लीनाथ जी और तल्लीनाथ जी को एक ही समझ लिया जाता है, लेकिन मल्लीनाथ जी मारवाड़ (बाड़मेर) के योद्धा थे और तल्लीनाथ जी जालौर के प्रकृति प्रेमी देवता।

7.तालिका (Quick Reference)

लोक देवता	मुख्य केंद्र	विशेष पहचान / उपाधि	मुख्य वाद्य / प्रतीक
तेजाजी	पर्वतसर, खड़नाल	काला और बाला के देवता	तलवार, अश्व, सर्प
देवनारायण जी	आसींद (भीलवाड़ा)	आयुर्वेद ज्ञाता, विष्णु अवतार	जंतर (फड़ वाचन)
कल्लाजी	सामलिया, चित्तौड़	चार हाथ वाले देवता	शेषनाग अवतार
मल्लीनाथ जी	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	मालानी के प्रणेता	प्राचीन पशु मेला
तल्लीनाथ जी	पांचौटा (जालौर)	ओरण के देवता	प्रकृति संरक्षक

अध्याय 13: राजस्थान की प्रमुख लोक देवियाँ - आस्था और संस्कृति के केंद्र



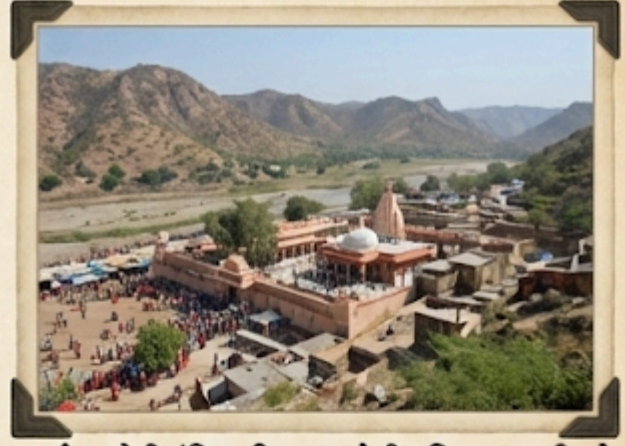
1. करणी माता मंदिर (देशनोक): 'काबा' (चुहों) का स्वतंत्र विचरण और दुग्धपान (वास्तविक फोटो)।



2. शिला देवी प्रतिमा (आमेर): राजा मानसिंह प्रथम द्वारा बंगाल से लाई गई काले पत्थर की मूर्ति (ऐतिहासिक फोटो)।



3. जीण माता के कनफड़े जोगी: सारंगी के साथ सबसे लंबा लोकगीत 'चिरंभी' गाते हुए (सांस्कृतिक फोटो)।



4. कैला देवी मंदिर परिसर (करोली): त्रिकूट पहाड़ी और कालीसिल नदी के तट पर स्थित लक्ष्मी मेला स्थल (दृश्य फोटो)।



5. शीतला माता (चाकसू): खंडित मूर्ति की पूजा और बासोड़ा पर्व का प्रतीक (धार्मिक स्थल फोटो)।

बिंदु 3: धार्मिक जीवन: संत, संप्रदाय और लोक देवता/देवियाँ

अध्याय 13: राजस्थान की लोक देवियाँ (करणी माता, जीण माता, शिला देवी आदि)

1. करणी माता (चूहों वाली देवी)

करणी माता बीकानेर के राठौड़ राजवंश और चारण समुदाय की कुलदेवी हैं। इन्हें 'दाढ़ी वाली डोकरी' और 'जगत जननी' का अवतार माना जाता है।

- **प्रमुख मंदिर:** देशनोक (बीकानेर)। इसे 'मठ' भी कहा जाता है।
- **काबा (Kaba):** मंदिर के परिसर में हजारों की संख्या में सफेद और काले चूहे स्वतंत्र विचरण करते हैं, जिन्हें 'काबा' कहा जाता है।
 - **मान्यता:** सफेद काबा का दर्शन अत्यंत शुभ और साक्षात् माता का दर्शन माना जाता है। चारण समुदाय में माना जाता है कि मरने के बाद वे काबा बनते हैं और काबा की मृत्यु के बाद वे पुनः चारण कुल में जन्म लेते हैं।
- **स्थापत्य:** मंदिर के मुख्य द्वार पर लगे चाँदी के विशाल किवाड़ महाराजा गंगा सिंह ने भेंट किए थे।
- **मेला:** वर्ष में दो बार (चैत्र और आश्विन नवरात्र) में यहाँ विशाल मेला भरता है।

2. जीण माता (भँवर माता)

जीण माता चौहानों की कुलदेवी और मीणाओं की आराध्य देवी मानी जाती हैं।

- **प्रमुख मंदिर:** रेवासा (सीकर) की 'हर्ष की पहाड़ी' के पास।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय हट्टड़ द्वारा करवाया गया था। औरंगजेब ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था, तब माता ने 'मधुमक्खियों' (भँवरों) के रूप में उसकी सेना पर प्रहार किया था, इसीलिए इन्हें '**भँवर माता**' भी कहा जाता है।
- **लोक साहित्य:** जीण माता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में **सबसे लंबा गीत** (चिरंमी) माना जाता है। इसे कनफड़े जोगी केसरिया वस्त्र पहनकर सारंगी और डमरू के साथ गाते हैं।
- **विशेषता:** यहाँ अष्टभुजी प्रतिमा है और माता को ढाई प्याला मदिरा (शराब) का भोग लगाया जाता है।

3. शिला देवी (आमेर)

शिला देवी जयपुर के कछवाहा राजवंश की इष्टदेवी हैं।

- **स्थापत्य व मूर्ति:** महाराजा **मानसिंह प्रथम** 16वीं शताब्दी के अंत में पूर्वी बंगाल (जेसोर) के राजा केदार को परास्त कर इस मूर्ति को लाए थे।
- **मंदिर:** आमेर दुर्ग के 'जलेब चौक' में स्थित है। यह प्रतिमा काले पत्थर (शिला) से निर्मित है, इसीलिए इन्हें शिला देवी कहा जाता है।
- **विशेषता:** यहाँ माता को 'चरणामृत' के रूप में मदिरा और जल, दोनों का प्रसाद मिलता है (श्रद्धालु अपनी इच्छा से लेते हैं)।

4. कैला देवी (करौली)

कैला देवी करौली के यादव (जादौन) वंश की कुलदेवी हैं। इन्हें 'अंजनी माता' (हनुमान जी की माता) का अवतार माना जाता है।

- **स्थान:** त्रिकूट पहाड़ी की घाटी में, कालीसिल नदी के तट पर (करौली)।
- **लांगुरिया गीत:** कैला देवी की आराधना में गाए जाने वाले प्रसिद्ध भक्ति गीतों को '**लांगुरिया**' कहा जाता है। इनके साथ 'गुटकन' नृत्य किया जाता है।
- **लक्ष्मी मेला:** चैत्र शुक्ल अष्टमी को यहाँ विशाल मेला भरता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं।
- **विशेषता:** मंदिर के सामने बोहरा की छतरी स्थित है, जहाँ झाड़ू-फूँक से बीमारियों का इलाज किया जाता है।

5. शीतला माता (चेचक की देवी)

शीतला माता को बच्चों की संरक्षिका और चेचक (Smallpox) की देवी के रूप में पूजा जाता है।

- **प्रमुख मंदिर:** सील की झूंगरी (चाकसू, जयपुर)। इसका निर्माण महाराजा **माधोसिंह प्रथम** ने करवाया था।
- **प्रतीक व वाहन:** इनका वाहन **गधा** है और पुजारी 'कुम्हार' जाति का होता है।
- **खंडित मूर्ति:** राजस्थान की एकमात्र देवी, जिनकी **खंडित मूर्ति** की पूजा की जाती है।
- **बासोड़ा (Basoda) उत्सव:** होली के आठवें दिन (चैत्र कृष्ण अष्टमी) को मनाया जाता है। इस दिन माता को ठंडे (बासी) भोजन का भोग लगाया जाता है। घर में ताजा भोजन नहीं बनता।

6. विश्लेषण: लोक देवियों का पारिस्थितिक और सामाजिक पक्ष

राजस्थान की लोक देवियाँ केवल धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे जैव-विविधता और सामाजिक सुरक्षा की संरक्षिकाएँ भी हैं। करणी माता का चूहों को संरक्षण देना और उन्हें परिवार का हिस्सा मानना जीव-जगत के प्रति संवेदनशीलता का उदाहरण है। शीतला माता की पूजा स्वच्छता और शीतलता के महत्व को रेखांकित करती है, जो ग्रीष्मकालीन रोगों (चेचक) से बचाव का पारंपरिक तरीका था। जीण माता का औरंगजेब के विरुद्ध 'मधुमक्खियों' द्वारा प्रतिरोध करना लोक-कथाओं में 'प्रकृति की शक्ति' को अधिरोपित करता है। ये देवियाँ राजस्थान की 'सांस्कृतिक प्रतिरोध' और 'मातृशक्ति' का जीता-जागता प्रमाण हैं।

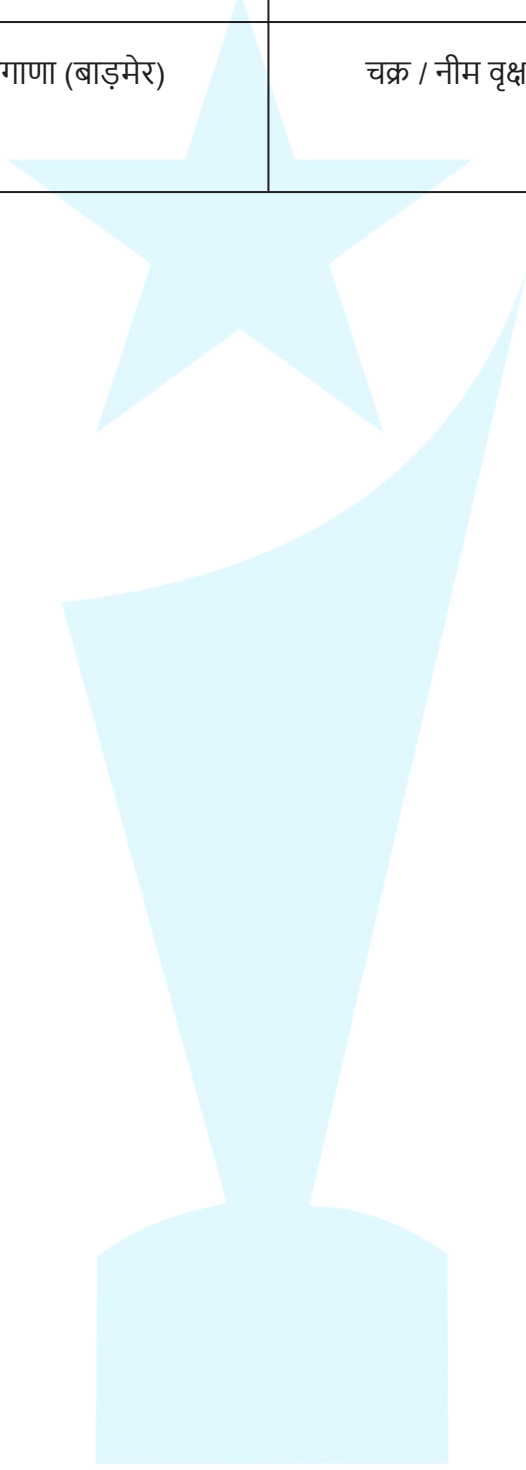
7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** **आई माता** (बिलाड़ा, जोधपुर) के मंदिर की अखंड ज्योति से '**केसर**' टपकती है, जिसे आँखों की बीमारी के लिए रामबाण माना जाता है।
- **नोट:** **सच्चिया माता** (ओसियाँ) ओसवाल जैनियों की कुलदेवी हैं, जिनका मंदिर प्रतिहार कालीन स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- कुछ स्रोतों में शिला देवी को कुलदेवी माना जाता है, परंतु तकनीकी रूप से वे कछवाहा वंश की **इष्टदेवी** हैं, जबकि उनकी कुलदेवी **जमवाय माता** हैं।

8.तालिका (Quick Reference)

लोक देवी	मुख्य स्थान	वाहन / प्रतीक	विशेष तत्व
करणी माता	देशनोक (बीकानेर)	काबा (चूहे)	सफेद चूहा (दर्शन शुभ)।
जीण माता	रेवासा (सीकर)	मधुमक्खी	सबसे लंबा लोक गीत।
शिला देवी	आमेर (जयपुर)	सिंह (अष्टभुजी)	जेसोर (बंगाल) से आगमन।
कैला देवी	करौली	लांगुरिया (भजन)	कालीसिल नदी तट।

शीतला माता	चाकसू (जयपुर)	गधा / बासोड़ा	खंडित मूर्ति की पूजा।
नागणेची माता	नागाणा (बाड़मेर)	चक्र / नीम वृक्ष	राठौड़ों की कुलदेवी।



wincompete

अध्याय 14: राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय - एक ऐतिहासिक झलक



1. मुक्तिधाम मुकाम (नोहर): विश्वोई संप्रदाय का प्रमुख तीर्थ स्थल (वास्तविक फोटो)।



2. कतरियासर धाम (बीकानेर): जसनाथी संप्रदाय का केंद्र और अग्नि नृत्य स्थल (सांस्कृतिक फोटो)।



3. दादूद्वारा (नारायणा): दादू पंथ की मुख्य पीठ और 'अलख दरीबा' (धार्मिक स्थल फोटो)।



4. रामद्वारा (शाहपुरा): रामस्नेही संप्रदाय की मुख्य पीठ और फूलडोल उत्सव स्थल (फोटो)।



5. चरणदास जी का मंदिर (दिल्ली): 42 नियमों वाले संप्रदाय की मुख्य पीठ (फोटो)।

बिंदु 3: धार्मिक जीवन: संत, संप्रदाय और लोक देवता/देवियाँ

अध्याय 14: राजस्थान के प्रमुख संत एवं संप्रदाय

1. जाम्भोजी एवं विश्रोई संप्रदाय (पर्यावरण रक्षक संप्रदाय)

संत जाम्भोजी को 'विश्व का प्रथम पर्यावरण वैज्ञानिक' माना जाता है।

- **जन्म:** पीपासर (नागौर) में पंचार वंशीय राजपूत परिवार में (1451 ई.)। इन्हें **विष्णु का अवतार** माना जाता है।
- **स्थापना:** 1485 ई. में समराथल धोरा (बीकानेर) में **विश्रोई संप्रदाय** की नींव रखी।
- **29 नियम (बीस+नौ = विश्रोई):** उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए 29 नियम दिए, जिनमें जीव रक्षा और हरे वृक्ष (विशेषकर खेजड़ी) को न काटना प्रमुख था।
- **प्रमुख शब्द:**
 - **सांथरी:** जाम्भोजी द्वारा उपदेश देने का स्थान।
 - **शब्दवाणी:** उनके द्वारा रचित 120 शब्दों का संग्रह।
- **मुख्य केंद्र:** मुक्तिधाम मुकाम (नोहर, बीकानेर)। यहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन और आश्विन अमावस्या को मेला भरता है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** दिल्ली सुल्तान **सिकंदर लोदी** ने जाम्भोजी के प्रभाव से गौ-हत्या पर रोक लगाई थी।

2. संत जसनाथजी एवं जसनाथी संप्रदाय

यह संप्रदाय अपनी कठिन साधना और चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध है।

- **जन्म:** कतरियासर (बीकानेर) में (1482 ई.)।
- **36 नियम:** जसनाथी संप्रदाय के अनुयायी 36 नियमों का पालन करते हैं। वे गले में काली ऊन का धागा बांधते हैं और **जाल** वृक्ष तथा **मोर पंख** को पवित्र मानते हैं।
- **अग्नि नृत्य (Agni Dance):** कतरियासर में जसनाथी सिद्धों द्वारा धधकते अंगारों पर **"फतेह-फतेह"** के उद्घोष के साथ यह नृत्य किया जाता है। यह विश्व स्तर पर अद्वितीय है।
- **संरक्षण:** सिकंदर लोदी ने जसनाथजी को कतरियासर के पास भूमि दान में दी थी।
- **ग्रंथ:** *सिंभूदड़ा* एवं *कोण्डा*।

3. दादू दयाल एवं दादू पंथ (राजस्थान के कबीर)

दादू दयाल ने निर्गुण भक्ति और सामाजिक समानता पर बल दिया।

- **जन्म:** अहमदाबाद (गुजरात) में, लेकिन कार्यस्थली राजस्थान रही।
- **मुख्य केंद्र:** **नारायणा (जयपुर)**। यहाँ दादू जी की मुख्य पीठ (दादूद्वारा) स्थित है।
- **52 स्तंभ:** दादू जी के 152 प्रमुख शिष्यों में से 52 शिष्य 'स्तंभ' कहलाए, जिन्होंने विभिन्न स्थानों पर पीठ स्थापित कीं।
- **अलख दरीबा:** दादू पंथ के सत्संग स्थल को 'अलख दरीबा' कहा जाता है।
- **साहित्य:** *दादू दयाल री वाणी* और *दादू दयाल रा दूहा*। इनकी भाषा **सधुक्कड़ी (ढूँढाड़ी मिश्रित)** है।
- **शाखाएँ:** खालसा, विरक्त, उत्तरादे, खाकी और नागा। (नागा शाखा के प्रवर्तक **सुंदरदास जी** थे)।
- **विशेषता:** दादू पंथी न तो शव को जलाते हैं और न दफनाते हैं, बल्कि पशु-पक्षियों के खाने के लिए खुले में छोड़ देते हैं।

4. रामस्नेही संप्रदाय

रामस्नेही संप्रदाय 'राम' नाम की निर्गुण भक्ति पर आधारित है।

- **स्थापना:** संत **रामचरण जी** ने शाहपुरा (भीलवाड़ा) में मुख्य पीठ स्थापित की।
- **प्रमुख शाखाएँ (RPSC के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण):**
 1. **शाहपुरा (भीलवाड़ा):** संस्थापक - रामचरण जी। उत्सव - **फूलडोल महोत्सव** (चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पंचमी)।
 2. **रेण (नागौर):** संस्थापक - दरियाव जी।
 3. **सिंहथल (बीकानेर):** संस्थापक - हरिराम दास जी। (इनका ग्रंथ 'निशानी' योग साधना पर आधारित है)।

4. **खेड़ापा (जोधपुर):** संस्थापक - रामदास जी।

- **विशेषता:** इस संप्रदाय के संत गुलाबी रंग के वस्त्र पहनते हैं और मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं।

5. चरणदासी संप्रदाय

- **संस्थापक:** चरणदास जी (जन्म: डेहरा, अलवर)।
- **नियम:** इस संप्रदाय में **42 नियम** होते हैं।
- **विशेष भविष्यवाणी:** चरणदास जी ने **नादिरशाह** के भारत पर आक्रमण की सटीक भविष्यवाणी की थी।
- **साहित्य:** इनकी शिष्याएँ **दयाबाई (दयाबोध)** और **सहजोबाई (सहज प्रकाश)** प्रसिद्ध लेखिकाएँ रहीं।

6. राजस्थान के संतों का पर्यावरणीय एवं लोक-कल्याणकारी दर्शन

राजस्थान के मध्यकालीन संत संप्रदाय केवल आध्यात्मिक शांति का मार्ग नहीं थे, बल्कि वे तत्कालीन संकटों के विरुद्ध 'लोक-चेतना' थे। जहाँ जाम्भोजी ने 29 नियमों के माध्यम से मरुस्थल के पारिस्थितिक तंत्र (खेजड़ी और हिरण) को धार्मिक सुरक्षा प्रदान की, वहीं दादू दयाल ने कबीर की भाँति जातिवाद पर प्रहार किया। जसनाथी संप्रदाय का 'अग्नि नृत्य' मनुष्य के मानसिक नियंत्रण और योग शक्ति का प्रदर्शन है। रामसेही संप्रदाय ने 'राम' को सांप्रदायिक सीमाओं से मुक्त कर एक सर्वव्यापी निर्गुण शक्ति के रूप में स्थापित किया। इन सभी संप्रदायों की सामान्य विशेषता 'लोकभाषा' का प्रयोग और 'मानव सेवा' रही है।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: संत पीपा** (गागरोन के राजा प्रताप सिंह) दर्जी समुदाय के आराध्य देव हैं। इनका मंदिर समदड़ी (बाड़मेर) में है।
- **तथ्य: संत धन्ना** (धुअन, टोंक) ने भक्ति के माध्यम से राजस्थान में धार्मिक आंदोलन की नींव रखी। इन्हें 'जाटों का आराध्य' माना जाता है।
- कुछ स्रोतों में विश्वोई और जसनाथी नियमों में भ्रम होता है; याद रखें—**विश्वोई (29)**, **जसनाथी (36)** और **चरणदासी (42)** नियम हैं।

8. तालिका (Quick Reference)

संप्रदाय	मुख्य पीठ	संस्थापक	विशिष्टता
विश्वोई	मुकाम (बीकानेर)	जाम्भोजी	29 नियम, पर्यावरण संरक्षण।
जसनाथी	कतरियासर (बीकानेर)	जसनाथजी	36 नियम, अग्नि नृत्य।
दादू पंथ	नारायणा (जयपुर)	दादू दयाल	52 स्तंभ, निर्गुण भक्ति।

रामस्नेही	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	रामचरण जी	फूलडोल उत्सव, गुलाबी वस्त्र।
चरणदासी	दिल्ली (मुख्य पीठ)	चरणदास जी	42 नियम, नादिरशाह की भविष्यवाणी।
लालदासी	नगला (भरतपुर)	लालदास जी	मेवात क्षेत्र का प्रमुख संप्रदाय।



wincompete

अध्याय 15: राजस्थान के प्रमुख धार्मिक संप्रदाय - एक ऐतिहासिक झलक



1. वल्लभ संप्रदाय: श्रीनाथजी की पिछवाई
कला (नाथद्वारा, 18वीं सदी)।



2. निम्बार्क संप्रदाय: परशुरामपुरी पीठ,
सलेमाबाद (अजमेर)।



3. गौड़ीय संप्रदाय: गोविंद देव जी मंदिर,
जयपुर (कछवाहा शासकों के इष्ट)।



4. नाथ संप्रदाय: महामंदिर, जोधपुर
(84 खंभों वाला मंदिर)।



5. निरंजनी संप्रदाय: संत हरिदास जी
(राजस्थान के वाल्मीकि)।

बिंदु 3: धार्मिक जीवन: संत, संप्रदाय और लोक देवता/देवियाँ

अध्याय 15: अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक मत: वल्लभ, निम्बार्क, गौड़ीय और नाथ संप्रदाय

1. वल्लभ संप्रदाय (पुष्टिमार्ग)

वल्लभ संप्रदाय सगुण भक्ति की 'कृष्णोपासना' धारा का सबसे महत्वपूर्ण मत है।

- **संस्थापक:** वल्लभाचार्य जी। इन्होंने 'अणुभाष्य' ग्रंथ की रचना की और 'पुष्टिमार्ग' (ईश्वर की कृपा का मार्ग) प्रतिपादित किया।
- **प्रमुख पीठ:** श्रीनाथजी मंदिर, नाथद्वारा (राजसमंद)। 1672 ई. में महाराणा राजसिंह के समय यह मूर्ति सिहाड़ (नाथद्वारा) में स्थापित की गई।
- **दर्शन:** इसमें श्रीनाथजी को 'बालकृष्ण' के रूप में पूजा जाता है। मंदिर में दिन में 8 बार दर्शन/झाँकी होती है।
- **पिछवाई कला (Pichwai Art):** मंदिर में मूर्ति के पीछे कपड़े पर किए गए चित्रण को पिछवाई कहते हैं। इसमें भगवान की लीलाओं और गायों का सुंदर अंकन होता है।
- **राजस्थान में 7 प्रमुख पीठ:** 1. श्रीनाथजी (नाथद्वारा) 2. द्वारिकाधीश (कांकरोली) 3. मथुरेशजी (कोटा) 4. गोकुलचन्द्रजी (कामा, भरतपुर) 5. मदनमोहनजी (कामा, भरतपुर) 6. बालकृष्णजी (सूरत) 7. गोकुलनाथजी (गोकुल)।

2. निम्बार्क संप्रदाय (हंस या सनकादि संप्रदाय)

यह संप्रदाय 'द्वैताद्वैतवाद' दर्शन पर आधारित है।

- **संस्थापक:** निम्बार्काचार्य जी।
- **मुख्य पीठ:** सलेमाबाद (अजमेर)। इसे 'परशुरामपुरी' भी कहते हैं।
- **प्रसारक:** राजस्थान में इस पीठ की स्थापना परशुराम देव ने की थी।
- **विशेषता:** इसमें भगवान कृष्ण की पूजा राधा के साथ 'युगल स्वरूप' में की जाती है। राधा को भगवान की परिणीता (पत्नी) मानकर पूजा जाता है।
- **मेला:** भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (राधाष्टमी) को सलेमाबाद में विशाल मेला भरता है।

3. गौड़ीय संप्रदाय (चैतन्य संप्रदाय)

यह बंगाल के प्रसिद्ध संत चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित भक्ति मार्ग है।

- **मुख्य पीठ:** गोविंद देव जी मंदिर (जयपुर)।
- **इतिहास:** सवाई जयसिंह द्वितीय ने इस मूर्ति को वृंदावन से लाकर जयपुर के सिटी पैलेस के सामने स्थापित करवाया।
- **विशेषता:** जयपुर के कछवाहा शासक स्वयं को गोविंद देव जी का 'दीवान' मानते थे और गोविंद देव जी को जयपुर का वास्तविक शासक।
- **अन्य मंदिर:** मदन मोहन जी (करौली)।

4. नाथ संप्रदाय (योग प्रधान मार्ग)

यह संप्रदाय शिव की उपासना और हठयोग साधना पर आधारित है।

- **प्रवर्तक:** मत्स्येन्द्रनाथ और उनके शिष्य गोरखनाथ।
- **राजस्थान में प्रमुख शाखाएँ:**
 1. **मानपन्थी (जोधपुर):** महामंदिर (जोधपुर) इसका मुख्य केंद्र है। इसका निर्माण महाराजा मानसिंह ने अपने गुरु आयस देवनाथ के सम्मान में करवाया था।
 2. **वैराग पंथ (नागौर):** राताडूंगा (पुष्कर के पास) इनका प्रमुख केंद्र है।
- **विशेषता:** नाथ साधु 'कनफड़े जोगी' कहलाते हैं। ये गले में सेली और कानों में कुंडल पहनते हैं।

5. निरंजनी संप्रदाय (कलियुग का कबीर)

यह संप्रदाय निर्गुण और सगुण भक्ति का समन्वय है।

- **संस्थापक:** संत हरिदास जी। इनका वास्तविक नाम 'हरिसिंह सांखला' था। वे पहले डाकू थे, बाद में वैराग्य होने पर संत बने (अतः इन्हें 'राजस्थान का वाल्मीकि' भी कहते हैं)।
- **मुख्य पीठ:** गाढ़ा (डीडवाना, नागौर)।
- **दर्शन:** इनके उपदेशों का संग्रह 'मन्त्र राजप्रकाश' और 'हरिपुरुष जी की वाणी' में है। इन्हें '**कलियुग का कबीर**' कहा जाता है।

6. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

विश्लेषण: भक्ति मतों का सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव

राजस्थान के ये संप्रदाय केवल आध्यात्मिक शांति के केंद्र नहीं थे, बल्कि इन्होंने राज्य के राजनैतिक स्वरूप को भी प्रभावित किया। गौड़ीय संप्रदाय और जयपुर के कछवाहा शासकों का संबंध (दीवान परंपरा) राज्य के दैवीय सिद्धांत को पुष्ट करता है। वहीं नाथ संप्रदाय ने मारवाड़ की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई। वल्लभ संप्रदाय की 'पिछवाई' और 'हवेली संगीत' ने राजस्थानी चित्रकला और संगीत को नई दिशा प्रदान की। ये सभी मत 'लोक' और 'शास्त्र' के बीच एक सेतु की तरह कार्य करते रहे हैं।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** रामस्नेही संप्रदाय की शाहपुरा पीठ के संत 'गुलाबी वस्त्र' पहनते हैं और निर्गुण राम की उपासना करते हैं।
- **नोट:** निष्कलंक संप्रदाय (संत मावजी द्वारा स्थापित) का प्रमुख केंद्र बेणेश्वर (डूंगरपुर) है। इन्हें 'वागड़ का गांधी' भी कहा जाता है।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान डीडवाना के 'हरिदास जी' और 'दादू दयाल' दोनों को राजस्थान का कबीर कहते हैं। तकनीकी रूप से दादू दयाल 'राजस्थान के कबीर' हैं और **हरिदास जी** 'कलियुग के कबीर' या 'राजस्थान के वाल्मीकि' हैं।

wincompete

8. तालिका (Quick Reference)

संप्रदाय	मुख्य पीठ	मुख्य देव	विशेष तथ्य
वल्लभ	नाथद्वारा	श्रीनाथजी (बालकृष्ण)	पिछवाई कला, 7 पीठ।
निम्बार्क	सलेमाबाद	राधा-कृष्ण (युगल)	परशुराम देव द्वारा स्थापित।
गौड़ीय	जयपुर	गोविंद देव जी	कछवाहा शासकों के इष्ट।
नाथ	जोधपुर	भगवान शिव	महामंदिर (84 खंभे)।
निरंजनी	गाढ़ा (नागौर)	निरंजन निराकार	राजस्थान के वाल्मीकि।

wincompete

अध्याय 16: राजस्थान के प्रमुख त्यौहार - परंपरा और उल्लास (एक ऐतिहासिक झलक)



1. विक्रम संवत कैलेंडर: राजस्थान का पारंपरिक पंचांग (ऐतिहासिक दस्तावेज़)।



2. जयपुर की गणगौर सवारी: शाही शोभायात्रा (वास्तविक फोटो)।



3. छोटी तीज की सवारी, जयपुर: श्रावण मास का उल्लास (सांस्कृतिक फोटो)।



4. कजली तीज, बूंदी: पारंपरिक शाही सवारी (पेंटिंग)।



5. लठ्ठमार होली, श्री महावीर जी: रंगों का उत्सव (फोटो)।



6. जैन मंदिर, पर्यूषण पर्व: त्याग और क्षमा का प्रतीक (धार्मिक स्थल फोटो)।

बिंदु 4: मेले और त्यौहार, सामाजिक रीति-रिवाज

अध्याय 16: राजस्थान के प्रमुख त्यौहार (विक्रम संवत एवं सांप्रदायिक उत्सव)

1. राजस्थानी कैलेंडर: विक्रम संवत (Vikram Samvat)

राजस्थान के अधिकांश त्यौहार 'विक्रम संवत' पर आधारित हैं। इसकी गणना चंद्रमा की कलाओं के आधार पर की जाती है।

- **महीने:** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।
- **पक्ष:** प्रत्येक महीने में दो पक्ष होते हैं— **कृष्ण पक्ष** (बदी) और **शुक्ल पक्ष** (सुदी)। महीने का समापन पूर्णिमा (Full Moon) को होता है।
- **नव वर्ष:** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव वर्ष प्रारंभ होता है।
- **अबूझ सावा:** वैशाख शुक्ल तृतीया (**आखा तीज**) को राजस्थान में सबसे बड़ा 'अबूझ सावा' माना जाता है, जिस दिन सर्वाधिक बाल विवाह (ऐतिहासिक रूप से) और मांगलिक कार्य होते हैं।

2. प्रमुख हिंदू त्यौहार: परंपरा और उल्लास

राजस्थान में त्यौहारों के चक्र के बारे में कहा जाता है— *"तीज त्यौहारों बावड़ी, ले डूबी गणगौर"* (त्यौहारों का आगमन 'तीज' से होता है और समापन 'गणगौर' से)।

A. गणगौर (Gangaur):

- **समय:** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक (मुख्य उत्सव 18 दिनों का)।
- **प्रतीक:** 'गण' (शिव) और 'गौर' (पार्वती) की पूजा। यह सौभाग्य और वैवाहिक प्रेम का प्रतीक है।
- **विशिष्टता:**
 - **गुलाबी गणगौर:** नाथद्वारा में (चैत्र शुक्ल पंचमी)।
 - **बिना ईसर की गवर:** जैसलमेर में (केवल पार्वती की पूजा, भाटियों द्वारा ईसर की मूर्ति छीन लिए जाने के कारण)।
 - **धींगा गवर:** जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- **दर्शन:** जयपुर और उदयपुर की गणगौर सवारी विश्व प्रसिद्ध है।

B. तीज (Teej):

- **छोटी तीज (श्रावणी तीज):** श्रावण शुक्ल तृतीया। यह हरियाली का प्रतीक है। जयपुर की तीज सवारी प्रसिद्ध है।
- **बड़ी तीज (कजली/सातूड़ी/बूढ़ी तीज):** भाद्रपद कृष्ण तृतीया। **बूंदी की कजली तीज** प्रसिद्ध है।

C. अन्य महत्वपूर्ण त्यौहार:

- **रक्षाबंधन:** श्रावण पूर्णिमा। इसे 'नारियल पूर्णिमा' भी कहते हैं।
- **जन्माष्टमी:** भाद्रपद कृष्ण अष्टमी।
- **दीपावली:** कार्तिक अमावस्या।
- **होली:** फाल्गुन पूर्णिमा। (ब्यावर की 'बादशाह की सवारी' और श्री महावीर जी की 'लटठमार होली' प्रसिद्ध है)।

3. जैन धर्म के त्यौहार: त्याग और क्षमा

- **पर्युषण पर्व (Paryushan):** यह जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है।
 - श्वेतांबर इसे 8 दिन और दिगंबर 10 दिन (दशलक्षण पर्व) तक मनाते हैं।
 - **संवत्सरी:** पर्युषण के अंतिम दिन को 'संवत्सरी' कहते हैं, जिसमें **'मिच्छामि दुक्कडम'** कहकर अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमा मांगी जाती है।
- **महावीर जयंती:** चैत्र शुक्ल त्रयोदशी।
- **सुगंध दशमी:** भाद्रपद शुक्ल दशमी (दिगंबर जैनियों का प्रमुख पर्व)।

4. मुस्लिम धर्म के त्यौहार: आस्था और बलिदान

- **ईद-उल-फितर (मीठी ईद):** रमजान के पवित्र महीने के बाद शव्वाल माह की पहली तारीख को।
- **ईद-उल-जुहा (बकरीद):** जिलहिज माह की 10 तारीख को (कुर्बानी का त्यौहार)।
- **मुहर्रम:** हिजरी संवत के पहले महीने की 10 तारीख को (हजरत इमाम हुसैन की शहादत की याद में **ताजिये** निकाले जाते हैं)।
- **शब-ए-बारात:** शाबान माह की 14 तारीख को।

5. ईसाई और अन्य समुदायों के त्यौहार

- **क्रिसमस:** 25 दिसंबर (ईसा मसीह का जन्म)।
- **ईस्टर:** पुनरुत्थान का पर्व।
- **गुरू नानक जयंती:** कार्तिक पूर्णिमा (सिख समुदाय का प्रमुख पर्व)।

6. त्यौहारों का सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य

राजस्थान के त्यौहार केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि ये कृषि चक्र और सामाजिक ताने-बाने से जुड़े हैं। 'आखा तीज' जहाँ रबी की फसल कटने के बाद समृद्धि का उत्सव है, वहीं 'गणगौर' महिलाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक मेल-मिलाप का मंच है। 'मिच्छामि दुक्कड़म' की परंपरा सामाजिक द्वेष को मिटाने का एक मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक समाधान प्रदान करती है। ये त्यौहार अकाल और कठिन मरुस्थलीय जीवन में संजीवनी का कार्य करते हैं, जिससे राजस्थान की अर्थव्यवस्था (पर्यटन और हस्तशिल्प) को भी गति मिलती है।

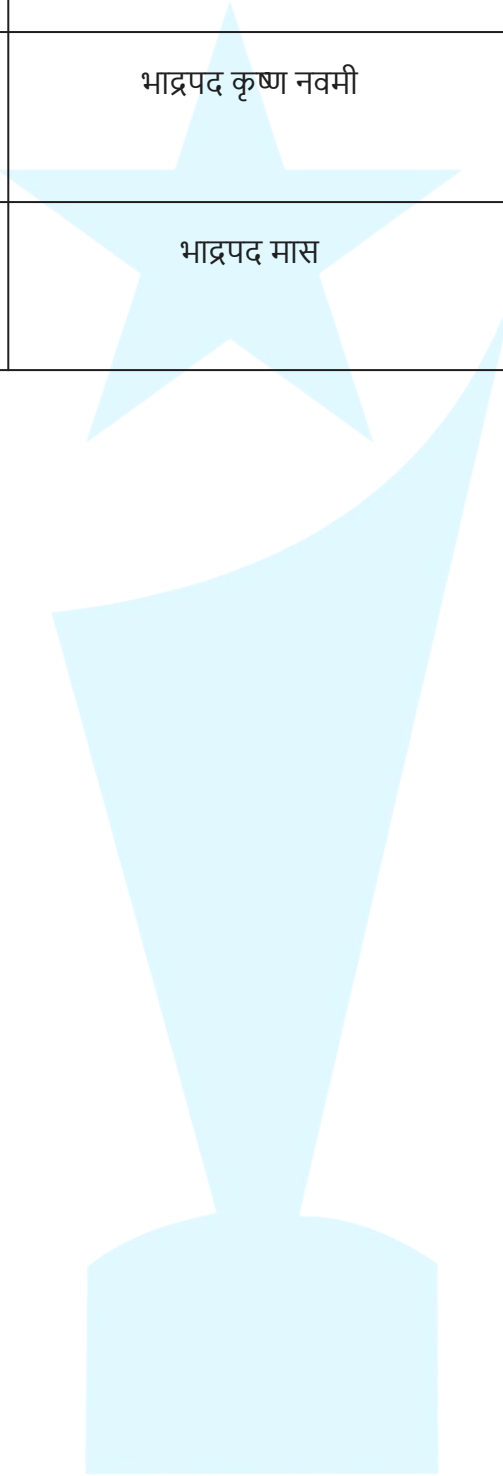
7. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य: बासोड़ा (शीतलाष्टमी)** के दिन राजस्थान में बासी भोजन करने की परंपरा है, जो ग्रीष्म ऋतु के आगमन पर स्वास्थ्य के प्रति सचेत करती है।
- **नोट: निर्जला एकादशी** (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी) को बिना पानी लिए व्रत रखने की कठिन परंपरा राजस्थान में अत्यधिक प्रचलित है।
- **विरोधाभास:** कुछ स्रोतों में गणगौर का समापन चैत्र शुक्ल तृतीया को बताया जाता है, परंतु उत्सव की तैयारियाँ होलिका दहन के अगले दिन (धुलंडी) से ही प्रारंभ हो जाती हैं।

8. तालिका (Quick Reference)

त्यौहार	तिथि (विक्रम संवत)	विशिष्ट क्षेत्र / पहचान
गणगौर	चैत्र शुक्ल तृतीया	त्यौहारों का समापन, जयपुर/उदयपुर।
आखा तीज	वैशाख शुक्ल तृतीया	अबूझ सावा, बीकानेर स्थापना दिवस।
छोटी तीज	श्रावण शुक्ल तृतीया	त्यौहारों का आगमन, जयपुर।

कजली तीज	भाद्रपद कृष्ण तृतीया	बूंदी की प्रसिद्ध सवारी।
गोगा नवमी	भाद्रपद कृष्ण नवमी	गोगाजी की पूजा।
पर्यूषण	भाद्रपद मास	क्षमावाणी पर्व (जैन धर्म)।



wincompete

अध्याय 17: राजस्थान के प्रमुख मेले - धार्मिक, जनजातीय और पशु मेले (एक ऐतिहासिक झलक)



1. पुष्कर मेला (अजमेर): राजस्थान का सबसे रंगीन मेला, ऊँटों का व्यापार (ऐतिहासिक फोटो)।



2. बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर): आदिवासियों का कुंभ, त्रिवेणी संगम पर स्नान (सांस्कृतिक फोटो)।



3. रामदेवरा मेला (जैसलमेर): मारवाड़ का कुंभ, सांप्रदायिक सदभाव का केंद्र (वास्तविक फोटो)।



4. तेरहताली नृत्य: रामदेवरा मेले का प्रमुख आकर्षण (सांस्कृतिक प्रस्तुति)।



5. श्री मल्लीनाथ पशु मेला (तिलवाड़ा): राजस्थान का सबसे प्राचीन पशु मेला (ऐतिहासिक दस्तावेज)।



6. कैला देवी मेला (करौली): लक्खी मेला और लांगुरिया भक्ति (धार्मिक स्थल)।

बिंदु 4: मेले और त्यौहार, सामाजिक रीति-रिवाज

अध्याय 17: राजस्थान के प्रमुख मेले: धार्मिक, जनजातीय और पशु मेले

1. पुष्कर मेला (अजमेर): राजस्थान का सबसे रंगीन मेला

पुष्कर मेले को 'राजस्थान का सबसे रंगीन मेला' (Colorful Fair) और 'मेलों का सिरमौर' कहा जाता है।

- **तिथि:** कार्तिक पूर्णिमा (अक्टूबर-नवंबर)। यह मेला कार्तिक एकादशी से पूर्णिमा तक चलता है।
- **विशेषता:** यह एक धार्मिक और व्यापारिक मेले का संगम है। यहाँ विश्व का एकमात्र सक्रिय ब्रह्मा मंदिर स्थित है।
- **ऊँटों का मेला:** यह विश्व का सबसे बड़ा ऊँटों का व्यापारिक मेला माना जाता है। यहाँ अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की भारी आवाजाही होती है।
- **दीपदान परंपरा:** कार्तिक पूर्णिमा की शाम को पुष्कर झील के 52 घाटों पर 'दीपदान' करने की परंपरा अत्यंत मनमोहक होती है।

2. बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर): 'आदिवासियों का कुंभ'

यह राजस्थान का सबसे बड़ा जनजातीय मेला है, जो डूंगरपुर जिले के नवाटापुरा गाँव में आयोजित होता है।

- **तिथि:** माघ पूर्णिमा।
- **त्रिवेणी संगम:** यह मेला सोम, माही और जाखम नदियों के पवित्र संगम पर लगता है।
- **धार्मिक महत्व:** यहाँ खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है, जो विश्व में अद्वितीय है। संत मावजी ने इस स्थल को ज्ञानपीठ के रूप में स्थापित किया था।
- **उपनाम:** इसे 'वागड़ का कुंभ', 'भीलों का कुंभ' और 'पुष्कर ऑफ वागड़' भी कहा जाता है।

3. रामदेवरा मेला (जैसलमेर): 'मारवाड़ का कुंभ'

सांप्रदायिक सद्भाव का यह सबसे बड़ा केंद्र बाबा रामदेव की तपोभूमि रूणीचा में स्थित है।

- **तिथि:** भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (बाबे री बीज) से भाद्रपद शुक्ल एकादशी तक।
- **प्रमुख आकर्षण:** कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला 'तेरहताली नृत्य'।
- **सांप्रदायिक सद्भाव:** यहाँ हिंदू और मुस्लिम (जो इन्हें रामसा पीर मानते हैं) दोनों समुदायों के लोग समान श्रद्धा से आते हैं।
- **प्रतीक:** यहाँ बाबा के 'पगल्ये' और कपड़े के बने 'घोड़े' चढ़ाए जाते हैं।

4. राजस्थान के प्रमुख पशु मेले (Cattle Fairs)

राजस्थान में पशु मेलों का आयोजन पशुपालन विभाग द्वारा किया जाता है। ये मेले नस्ल संरक्षण और व्यापार का मुख्य केंद्र हैं।

मेले का नाम	स्थान	तिथि	विशेष तथ्य
श्री वीर तेजाजी पशु मेला	पर्वतसर (नागौर)	भाद्रपद शुक्ल दशमी	आय की दृष्टि से सबसे बड़ा पशु मेला।

श्री मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	चैत्र कृष्ण 11 - शुक्ल 11	राजस्थान का सबसे प्राचीन पशु मेला।
श्री गोमती सागर पशु मेला	झालारापाटन (झालावाड़)	वैशाख सुदी 13 - जेठ बदी 5	मालवी नस्ल के पशुओं हेतु प्रसिद्ध।
जसवंत पशु मेला	भरतपुर	आश्विन मास	हरियाणा नस्ल के पशुओं हेतु।
कार्तिक पशु मेला	पुष्कर (अजमेर)	कार्तिक पूर्णिमा	गिर नस्ल और ऊँटों के व्यापार हेतु।

5. अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक मेले

- **कोलायत मेला (बीकानेर):** कार्तिक पूर्णिमा को कपिल मुनि के आश्रम पर। यहाँ भी दीपदान की परंपरा है।
- **सावा मेला (चुरू):** कार्तिक पूर्णिमा को। यह राजस्थान में सिखों का सबसे बड़ा मेला है।
- **सीताबाड़ी मेला (बारां):** ज्येष्ठ अमावस्या को। इसे 'सहरिया जनजाति का कुंभ' कहा जाता है।
- **केसरियाजी मेला (ऋषभदेव, उदयपुर):** चैत्र कृष्ण अष्टमी-नवमी। यहाँ भील और जैन दोनों समुदाय श्रद्धा रखते हैं। माता को 'केसर' चढ़ाई जाती है।

6. विश्लेषण: मेलों का समाजशास्त्रीय एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य

राजस्थान के मेले केवल मनोरंजन या व्यापार की चौकियाँ नहीं हैं, बल्कि ये 'सामाजिक समरसता' की पाठशालाएँ हैं। रामदेवरा का मेला ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाता है, तो बेणेश्वर का मेला आदिवासियों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अधिकारों की पहचान है। आर्थिक दृष्टि से, पर्वतसर और तिलवाड़ा जैसे मेले ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 'नकद नकदी' (Cash liquidity) का संचार करते हैं। पशु मेलों ने ही राजस्थान की श्रेष्ठ नस्लों (राठी, थारपारकर, मालवी) को संरक्षित करने में वैज्ञानिक भूमिका निभाई है। ये मेले 'इको-टूरिज्म' के सबसे पुराने वैश्विक उदाहरण हैं।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: घोटिया अम्बा मेला (बांसवाड़ा)** को भी आदिवासियों का महत्वपूर्ण मेला माना जाता है।
- **नोट: चैत्र मास** में राजस्थान में सर्वाधिक मेलों का आयोजन होता है।
- आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला **पर्वतसर** है, लेकिन पर्यटन की दृष्टि से सबसे अधिक विदेशी मुद्रा **पुष्कर मेले** से प्राप्त होती है।

8. (Quick Reference)

मेले का नाम	जिला	उपनाम	तिथि
पुष्कर मेला	अजमेर	रंगीला मेला	कार्तिक पूर्णिमा
बेणेश्वर मेला	झुंजरपुर	आदिवासियों का कुंभ	माघ पूर्णिमा
रामदेवरा मेला	जैसलमेर	मारवाड़ का कुंभ	भाद्रपद शुक्ल 2-11
कपिल मुनि मेला	बीकानेर	जांगल प्रदेश का कुंभ	कार्तिक पूर्णिमा
केला देवी मेला	करौली	लक्ष्मी मेला	चैत्र शुक्ल अष्टमी

wincompete

अध्याय 18: राजस्थान के सामाजिक रीति-रिवाज - संस्कार और प्रथाएँ (एक ऐतिहासिक झलक)



1. जलवा / कुआँ पूजन: जन्म के बाद
जल स्रोत की पूजा (पारंपरिक फोटो)।



2. तोरण मारना: विवाह की एक रस्म,
वीरता का प्रतीक (विवाह फोटो)।



3. मोसर (मृत्यु भोज): एक पुरानी
सामाजिक प्रथा (ऐतिहासिक सामूहिक
फोटो)।



4. केसरिया करना: युद्ध में अंतिम
बलिदान का प्रतीक (ऐतिहासिक
पेंटिंग)।

बिंदु 4: मेले और त्यौहार, सामाजिक रीति-रिवाज

अध्याय 18: राजस्थान के सामाजिक रीति-रिवाज: संस्कार और प्रथाएँ

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा की 'राजस्थान का सामाजिक जीवन', डॉ. राघवेंद्र सिंह मनोहर और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के आधिकारिक शोध पत्रों पर आधारित है।

1. जन्म से संबंधित प्रमुख संस्कार और रस्में

मानव जीवन को शुद्ध और सुसंस्कृत बनाने हेतु हिंदू धर्म में 16 संस्कारों का विधान है, जिन्हें राजस्थान में स्थानीय रंगत के साथ मनाया जाता है।

- **पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन:** गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा और मानसिक विकास हेतु। राजस्थान में इसे 'अठवाँ' या 'गोद भराई' जैसी रस्मों से जोड़ा जाता है।
- **जातकर्म एवं नामकरण:** शिशु के जन्म पर गुड़-बाँटना (जच्चा-गीत) और नक्षत्र के आधार पर नाम रखना।
- **जलवा / कुआँ पूजन:** जन्म के कुछ दिनों बाद जच्चा (माता) द्वारा पवित्र जल स्रोत (कुआँ) की पूजा करना। यह राजस्थान की एक विशिष्ट रस्म है।
- **चूड़ाकर्म / जड़ला (Jadula):** इसे 'मुंडन संस्कार' भी कहते हैं। शिशु के जन्म के पहले या तीसरे वर्ष में किसी लोक देवता के स्थान पर पहली बार बाल कटवाना।
- **यज्ञोपवीत (Janeu):** विद्यारंभ से पूर्व जनेऊ धारण करना।

2. विवाह से संबंधित प्रमुख रस्में

राजस्थान में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों और संस्कृतियों का उत्सव है।

- **सगाई / टीका:** संबंध पक्का होने की रस्म।
- **कुंकुम पत्री:** विवाह का प्रथम निमंत्रण पत्र, जो सर्वप्रथम **गणेश जी (रणथंभौर)** को भेजा जाता है।
- **विनायक स्थापना:** घर में विघ्नहर्ता गणेश की स्थापना कर मांगलिक कार्यों का प्रारंभ।
- **पीठी (बाण बैठाना):** वर-वधू के शरीर पर तेल और हल्दी का लेप (उबटन) लगाना।
- **बिन्दोरा (Bindora):** विवाह से पूर्व रिश्तेदारों द्वारा वर-वधू को भोज पर आमंत्रित करना।
- **तोरण मारना:** वीरता का प्रतीक। वर द्वारा वधू के घर के मुख्य द्वार पर लटके लकड़ी के 'तोरण' को तलवार या छड़ी से छूना।
- **हथलेवा (Panigrahan):** वर और वधू के हाथों को मिलाकर गठबंधन करना।
- **मुकलावा / आणा (Muklawā):** बाल विवाह की स्थिति में जब वधू वयस्क होने पर पहली बार स्थायी रूप से ससुराल जाती है, तो उस रस्म को 'मुकलावा' या 'आणा' कहते हैं।

3. मृत्यु से संबंधित प्रमुख रस्में

मृत्यु के पश्चात शोक और परलोक की मान्यताओं से जुड़ी रस्में राजस्थान में अत्यंत विस्तृत हैं।

- **बैकुंठी:** अर्थी को सजाकर ले जाना। वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर 'बखेर' (सिक्के फेंकना) की जाती है।
- **कपाल क्रिया:** मुखाग्नि के समय बाँस से सिर पर चोट करना (धार्मिक मान्यतानुसार)।
- **सातरवाड़ा:** मृत्यु के पश्चात 12 दिनों तक शोक सांत्वना देने हेतु रिश्तेदारों का आना-जाना।
- **औसर / मोसर (Mosar):** मृत्यु भोज की प्रथा।
 - **मोसर:** मृत्यु के बाद किया जाने वाला भोज।
 - **जोसर:** व्यक्ति द्वारा अपने जीवित रहते ही अपना मृत्यु भोज करना।
- **भदौर:** मृत्यु के समय परिवार के पुरुषों द्वारा सिर मुंडवाना।

4. अन्य विशिष्ट सामाजिक प्रथाएँ और कुप्रथाएँ

- **डावरिया (Davariya):** प्राचीन काल में राजा-महाराजा अपनी पुत्री के विवाह में दहेज के रूप में कुछ कुंवारी कन्याएँ भी देते थे, जिन्हें 'डावरिया' कहा जाता था।

- **त्याग प्रथा:** राजपूतों के विवाह के अवसर पर चारणों और भाटों द्वारा मुँहमाँगी नेग (रकम) माँगना। इसे 1841 में जोधपुर रियासत ने सर्वप्रथम प्रतिबंधित करने का प्रयास किया था।
- **सागड़ी प्रथा (Sagari):** यह बंधुआ मजदूरी का एक रूप था। 1961 में 'सागड़ी निवारण अधिनियम' द्वारा इसे प्रतिबंधित किया गया।
- **नाता प्रथा:** पत्नी द्वारा अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ रहना। यह मुख्य रूप से जनजातीय और पिछड़ी जातियों में प्रचलित एक सामाजिक समझौता है।
- **केसरिया करना:** युद्ध में विजय की आशा न होने पर योद्धाओं द्वारा केसरिया वस्त्र पहनकर अंतिम युद्ध करना।

5. विश्लेषण: सामाजिक रीति-रिवाजों का बदलता स्वरूप

राजस्थान के रीति-रिवाज यहाँ के इतिहास की वीरता और सामाजिक संघर्षों की उपज हैं। 'तोरण मारना' जहाँ मध्यकालीन सैन्य विजयों का प्रतीकात्मक रूप है, वहीं 'आणा' बाल विवाह जैसी कुरीतियों के विरुद्ध एक पारंपरिक सामाजिक सामंजस्य था। वर्तमान में 'मोसर' (मृत्यु भोज) और 'डावरिया' जैसी प्रथाओं को कानूनी रूप से अपराध घोषित किया गया है, जो राजस्थान के एक प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ने का संकेत है। संस्कारों में 'जड़ला' और 'जलवा पूजन' का आज भी अक्षुण्ण रहना यहाँ की लोक-आस्था की जड़ों की मजबूती को दर्शाता है।

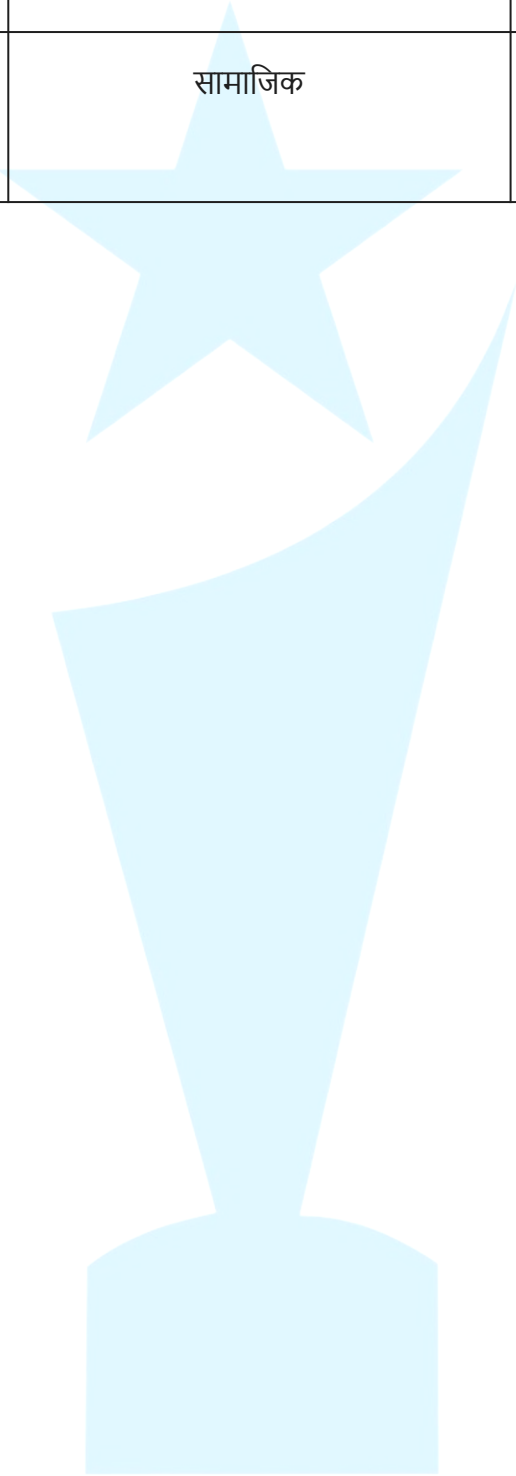
6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** 'बखेर' की रस्म केवल वृद्ध व्यक्ति की अर्धी के समय की जाती है, जो पूर्ण जीवन जीने का उत्सव है।
- **नोट:** 'पछेवड़ा' शीतकाल में पुरुषों द्वारा ओढ़ा जाने वाला वस्त्र है, जबकि विवाह में 'बरी-पड़ला' वर पक्ष द्वारा वधू के लिए लाए जाने वाले वस्त्र-आभूषण होते हैं।
- **विरोधाभास:** 'मोसर' और 'औसर' को अक्सर एक ही माना जाता है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में 'औसर' मृत्यु के 12वें दिन के भोज को और 'मोसर' बड़े स्तर पर किए जाने वाले सामुदायिक भोज को कहा जाता है।

7. तालिका (Quick Reference)

रस्म / प्रथा	जीवन चक्र	संक्षिप्त विवरण
जड़ला	जन्म	बालक के प्रथम बार काटे गए बाल।
मुकलावा	विवाह	वधू का गौना (ससुराल प्रस्थान)।
कांकण डोरा	विवाह	वर-वधू के हाथ में बांधा गया रक्षा सूत्र।
मोसर	मृत्यु	मृत्यु भोज (नुक्ता)।

नाता	वैवाहिक संबंध	पुनर्विवाह या अन्य पुरुष के साथ रहना।
सागड़ी	सामाजिक	बंधुआ मजदूरी प्रथा।



wincompete

अध्याय 19: राजस्थानी जनजातीय वेशभूषा और आभूषण - एक ऐतिहासिक झलक



1. भील पुरुष: डेपाड़ा, पोट्या और फालू (ऐतिहासिक फोटो)।



2. भील महिलाएँ: कछावू और पारंपरिक आभूषण (1920 का दशक)।



3. ताराभांत की ओढ़नी: आदिवासी कन्याओं का प्रिय परिधान (टेक्सटाइल नमूना)।



4. सहरिया पुरुष: सलूका, पंछा और खप्ता (सांस्कृतिक फोटो)।



5. जनजातीय आभूषण: खुंगगाली और हंसली (संग्रहालय की वस्तु)।

बिंदु 4: मेले और त्यौहार, सामाजिक रीति-रिवाज, वेशभूषा एवं आभूषण

अध्याय 19: वेशभूषा एवं आभूषण (भाग-2): जनजातीय विशिष्टता एवं आधुनिक प्रभाव

यह सामग्री डॉ. भगवतीलाल व्यास (जनजातीय संस्कृति के विशेषज्ञ), डॉ. जयसिंह नीरज और राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के 'राजस्थानी वेशभूषा एवं आभूषण' नामक आधिकारिक ग्रंथ पर आधारित है।

1. जनजातीय वेशभूषा: भील और गरासिया अंचल

राजस्थान की जनजातीय वेशभूषा प्रकृति के करीब और अत्यधिक कार्यात्मक (Functional) है।

A. भील पुरुषों के वस्त्र:

- **ढेपाड़ा (Dhepada):** भील पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती। (RPSC का सबसे पसंदीदा प्रश्न)।
- **पोट्या (Potya):** सिर पर लपेटा जाने वाला सफेद या रंगीन लत्ता (पगड़ी का स्थानीय रूप)।
- **फालू (Phalu):** कंधे पर रखा जाने वाला गमछा या तौलिया, जिसका उपयोग बहुउद्देश्यीय होता है।
- **खोयतू (Khoytu):** लंगोटी का एक रूप जो अत्यधिक गरीब या वनवासी भीलों द्वारा प्रयुक्त होता है।

B. भील महिलाओं के वस्त्र:

- **कछावू (Kachhavu):** भील महिलाओं द्वारा घुटनों तक पहना जाने वाला गहरे लाल या काले रंग का घाघरा।
- **पीरिया (Piria):** भील वधू द्वारा विवाह के अवसर पर पहनी जाने वाली पीले रंग की ओढ़नी।
- **सिन्दूरी:** भील महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली लाल रंग की साड़ी।
- **कटकी (Katki):** अविवाहित जनजातीय कन्याओं की ओढ़नी, जिसे 'ताराभांत की ओढ़नी' भी कहा जाता है।

2. अन्य जनजातीय वेशभूषा (सहरिया एवं गरासिया)

- **सहरिया (बारां):** इनके पुरुषों की कमीज को 'सलूका' कहा जाता है। घुटनों तक की धोती को 'पंछा' और सिर की पगड़ी को 'खप्ता' कहते हैं।
- **गरासिया (सिरोही):** पुरुष 'झुलकी' (आधी बांह की कमीज) पहनते हैं। महिलाएँ घेरेदार घाघरे और चटक रंगों की ओढ़नी पहनती हैं।

3. वेशभूषा की विशिष्ट छपाई एवं भांत (Patterns)

आदिवासी समाज में ओढ़नी के 'भांत' (डिजाइन) उनकी सामाजिक स्थिति और क्षेत्र को दर्शाते हैं:

- **ताराभांत की ओढ़नी:** इसका किनारा और पल्लू तारों जैसा होता है। यह आदिवासी युवतियों में सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- **लहरभांत और ज्वारभांत:** ये कृषि और प्रकृति से प्रेरित डिजाइन हैं।
- **केरीभांत:** आम (केरी) के आकार वाली कलात्मक ओढ़नी।

4. आधुनिक प्रभाव: परंपरा से ग्लोबल फैशन तक

21वीं सदी में राजस्थान की वेशभूषा ने अपनी क्षेत्रीय सीमाओं को तोड़कर वैश्विक स्तर पर स्थान बनाया है।

- **ब्रिजेस (Brijes):** जो कभी राजपूत सामंतों का शिकार-परिधान था, वह अब अंतरराष्ट्रीय 'जोधपुरी सूट' और 'रैंप फैशन' का हिस्सा है।
- **लहरिया और बंधेज:** इन्हें अब 'हेरिटेज फैशन' (Heritage Fashion) के रूप में देखा जाता है। सिल्क और जॉर्जेट पर बंधेज का प्रयोग कॉर्पोरेट और वैश्विक उत्सवों में बढ़ रहा है।
- **आभूषणों का आधुनिक रूप:** भारी सोने के आभूषणों के स्थान पर अब 'लाइटवेट' (Lightweight) और 'एंटीक' (Antique) आभूषणों का चलन बढ़ा है। 'थेवा कला' और 'ब्लू पॉटरी' के डिजाइनों को अब ज्वेलरी में प्रयोग किया जा रहा है।

5. विश्लेषण: वेशभूषा का पारिस्थितिक एवं वर्गीय तर्क

जनजातीय वेशभूषा (जैसे तंग धोती 'ढेपाड़ा') का सीधा संबंध उनके भौगोलिक परिवेश (पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्र) से है। घने जंगलों में शिकार या आवाजाही के लिए तंग वस्त्र अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक होते हैं। इसी प्रकार, 'पीरिया' ओढ़नी का पीला रंग सूर्य और सृजन का प्रतीक है जो वैवाहिक जीवन में पवित्रता को दर्शाता है। आधुनिक प्रभाव ने इन वस्त्रों को 'संग्रहालय की वस्तु' बनने से बचाया है। आज का युवा 'साफा' या 'पोमचा' को केवल रस्म नहीं, बल्कि 'सांस्कृतिक गौरव' (Cultural Pride) के रूप में धारण कर रहा है।

6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: नांदणा (Nandna)** राजस्थान का सबसे प्राचीन वस्त्र माना जाता है, जो नीले रंग का होता है और मुख्य रूप से आदिवासी महिलाओं द्वारा प्रयुक्त होता है।
- **नोट: रेजा (Reja)** सहरिया महिलाओं का विशेष वस्त्र है, जिसका कपड़ा मोटा और टिकाऊ होता है।
- कुछ पर्यटक गाइड 'बूजेस' को केवल ग्रामीण मानते हैं, परंतु आधिकारिक रूप से यह एक 'प्रिंसली अट्टायर' (Princely Attire) है जिसका विकास दरबारी शिष्टाचार और घुड़सवारी हेतु हुआ था।

7. तालिका (Quick Reference)

शब्द / वस्त्र	समुदाय / वर्ग	विशिष्ट विवरण
ढेपाड़ा	भील (पुरुष)	घुटनों तक तंग धोती।
कछावू	भील (महिला)	घुटनों तक का घाघरा।
कटकी	अविवाहित कन्याएँ	ताराभांत की प्रसिद्ध ओढ़नी।
खप्ता	सहरिया (पुरुष)	सिर की विशेष पगड़ी।
नांदणा	जनजातीय (प्राचीन)	नीले रंग का प्राचीनतम वस्त्र।
खुणगाली	महिला	गले में पहना जाने वाला ठोस आभूषण (हंसली का रूप)।



1. बढार (Badhar): विवाह के अवसर पर सामूहिक भोज (ऐतिहासिक फोटो, 20वीं सदी की शुरुआत)।

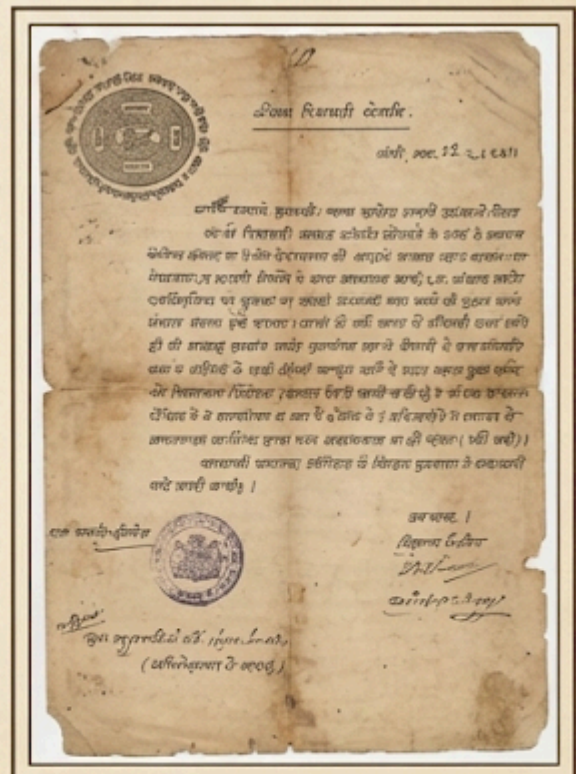


Harbilas Sarda

2. हरविलास शारदा (1929): 'शारदा एक्ट' के प्रणेता, बाल विवाह विरोधी कानून (पोर्ट्रेट)।



3. पारंपरिक आभूषण: तिमणिया (गले का), गोखरू (कलाई का) (संग्रहालय से वस्तु)।



4. ऐतिहासिक समाज सुधार: कुप्रथाओं पर प्रतिबंध संबंधी रियासती आदेश (अभिलेखागार से दस्तावेज़, 19वीं सदी)।

बिंदु 4: मेले और त्यौहार, सामाजिक रीति-रिवाज

अध्याय 20: सामाजिक शब्दावली का अंतिम संकलन एवं परीक्षा उपयोगी विश्लेषण

1. ऐतिहासिक समाज सुधार एवं प्रतिबंध (Legal Reforms)

कुप्रथा	प्रथम प्रतिबंध (रियासत)	वर्ष	महत्वपूर्ण व्यक्तित्व
सती प्रथा	बूंदी	1822	राजा विष्णु सिंह
कन्या वध	कोटा	1833	—
डाकन प्रथा	मेवाड़ (खैरवाड़ा)	1853	जे.सी. ब्रुक
त्याग प्रथा	जोधपुर	1841	—
बाल विवाह	अजमेर (शारदा एक्ट)	1929	हरविलास शारदा
समाधि प्रथा	जयपुर	1844	लुडलो

2. विशिष्ट सामाजिक शब्दावली (Glossary)

ये शब्द राजस्थान के लोक-जीवन और प्रशासनिक इतिहास के संधि स्थल पर स्थित हैं:

- **बढ़ार (Badhar):** विवाह के अगले दिन वर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला सामूहिक भोज। (RPSC में कई बार पूछा गया)।
- **ओळंदी (Olindi):** नववधू के साथ ससुराल भेजी जाने वाली कुंवारी कन्या या सहेली, जो वधू की सहायता हेतु जाती थी।
- **रीत (Reet):** कन्या के विवाह के अवसर पर वर पक्ष से ली जाने वाली एक निश्चित धनराशि। (आधुनिक समय में इसे 'दहेज' का उल्टा रूप माना जा सकता है)।
- **काण (Kaan):** मृत्यु के पश्चात शोक प्रकट करने के लिए रिश्तेदारों का घर आना।
- **सामेला / मधुपर्क:** बारात जब वधू के घर के पास पहुँचती है, तब वधू पक्ष द्वारा किया जाने वाला स्वागत।
- **परावणी (Paravni):** विवाह संपन्न होने के बाद बारात की विदाई के समय दिया जाने वाला उपहार या नेग।
- **कोथळा (Kothala):** सावन के महीने में बेटी को ससुराल भेजे जाने वाले उपहार, मिठाई और वस्त्र।

3. वेशभूषा एवं आभूषणों का त्वरित संकलन (महत्वपूर्ण बिंदु)

- अंवरा: पैर का आभूषण।
- तुलसी, तिमणिया, हमेल: गले के आभूषण।
- बगड़ी, गोखरू, गजरा: कलाई के आभूषण।
- मेमंद, सांकली, टीडी-भलको: सिर के आभूषण।
- नोगरी: हाथ का आभूषण।

4. विश्लेषण: लोक-शब्दावली का सांस्कृतिक संरक्षण

राजस्थान की सामाजिक शब्दावली केवल शब्दों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक लुप्त होती 'मौखिक विरासत' है। 'बढ़ार' और 'सामेला' जैसे शब्द अतिथि देवो भवः की भावना को दर्शाते हैं, जबकि 'ओळंदी' और 'डावरिया' जैसी प्रथाएँ सामंती समाज की जटिलताओं और स्त्रियों की स्थिति का ऐतिहासिक साक्ष्य देती हैं। RPSC इन शब्दों को इसलिए पूछती है ताकि आगामी अधिकारियों को राजस्थान की जमीनी संस्कृति और ऐतिहासिक संवेदनशीलता का ज्ञान हो सके। आधुनिक विधिक सुधारों (जैसे शारदा एक्ट) ने इन परंपराओं को आधुनिकता के साथ संतुलित किया है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- तथ्य: 'पासीब' किले की दीवार तक पहुँचने का चबूतरा है, जबकि 'पगपान' पैर का एक आभूषण है; इनमें भ्रमित न हों।
- नोट: राजस्थान में 'बाल विवाह' की रोकथाम हेतु 'अक्षय तृतीया' (आखा तीज) पर प्रशासन विशेष निगरानी रखता है।
- कुछ पुस्तकों में 'त्याग प्रथा' को केवल चारणों से जोड़ा जाता है, परंतु यह राजपूत समाज की एक व्यापक आर्थिक समस्या थी जिसे रोकने के लिए 'वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा' (1889) ने बड़े प्रयास किए थे।

6. परीक्षा उपयोगी प्रश्न बैंक (Mock Drill)

1. प्रश्न: 'बेंगटी' किस लोक देवता का मुख्य पूजा स्थल है? (उत्तर: हड़बूजी)।
2. प्रश्न: 'मोठड़ा' वेशभूषा के कौन से प्रकार के अंतर्गत आता है? (उत्तर: पगड़ी/ओढ़नी)।
3. प्रश्न: आदिवासियों में 'कटकी' वस्त्र किसके द्वारा पहना जाता है? (उत्तर: अविवाहित कन्याओं द्वारा)।
4. प्रश्न: 'मिच्छामि दुक्कड़म' किस पर्व से संबंधित है? (उत्तर: पर्यूषण पर्व)।
5. प्रश्न: 'नोगरी' आभूषण शरीर के किस अंग में पहना जाता है? (उत्तर: हाथ)।

संदर्भ सूची:

1. राजस्थान अध्ययन - कक्षा 10 (RBSE)।
2. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
3. राजस्थान की जनजातीय संस्कृति - डॉ. भगवतीलाल व्यास।
4. राजस्थानी वेशभूषा एवं शिल्प - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. राजस्थान का सामाजिक जीवन - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
6. राजस्थानी लोक जीवन की शब्दावली - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
7. राजस्थान के उत्सव, त्यौहार एवं मेले - डॉ. जयसिंह नीरज।
8. आधिकारिक वेबसाइट - राजस्थान पर्यटन विभाग।
9. राजस्थानी संस्कृति के प्रतिमान - हुकुम चंद जैन।
10. राजस्थान के त्यौहार एवं मेले - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
11. राजस्थान के मध्यकालीन धार्मिक संप्रदाय - डॉ. पेमाराम।
12. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा - हुकुम चंद जैन।
13. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन एवं संत - डॉ. पेमाराम (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
14. राजस्थान की लोक देवियाँ - डॉ. पेमाराम (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
15. राजस्थान के लोक देवता - डॉ. पेमाराम (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
16. राजस्थानी लोक जीवन एवं धर्म - डॉ. जयसिंह नीरज।

17. राजस्थानी कहावत कोश - डॉ. कन्हैयालाल सहल।
18. राजस्थानी शब्दावली एवं व्याकरण - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
19. आधुनिक राजस्थानी साहित्य के आयाम - डॉ. किरण नाहटा।
20. राजस्थानी साहित्य का इतिहास - डॉ. हीरालाल माहेश्वरी।
21. राजस्थानी लोक साहित्य का भविष्य - डॉ. महेंद्र भानावत।
22. राजस्थान की रजत बूंदें और लोक जीवन - अनुपम मिश्र।
23. राजस्थान के ख्यात साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. मनोहर शर्मा।
24. राजस्थान की भाषा और बोलियाँ - डॉ. मोतीलाल मेनारिया।
25. Linguistic Survey of India (Vol. IX) - G.A. Grierson.
26. राजस्थान के लोक नाट्य - डॉ. महेंद्र भानावत (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
27. भारतीय लोक कला मंडल की शोध पत्रिकाएँ - उदयपुर।
28. राजस्थानी लोक नृत्य - डॉ. महेंद्र भानावत।
29. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा - डॉ. जयसिंह नीरज।
30. राजस्थान के लोक वाद्य - डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर।
31. राजस्थानी लोक कला कोश - कोमल कोठारी।
32. राजस्थान के लोक वाद्य एवं संगीत - डॉ. जयसिंह नीरज (राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी)।
33. कोमल कोठारी के संस्मरण एवं शोध - रुपांयण संस्थान, बोरुंदा।
34. RPSC RAS Pre/Mains - Point 4 Final Analysis. Social Customs Section (Previous Years). Tribal Culture & Attire Analysis. Analysis (Fairs & Festivals Section). Festivals Section (Previous Years). Sects & Schools of Thought (Previous Years). Saints & Sects (Previous Years). (Culture & Religion). (Language Section) Analysis. (Folk Deities Section). Modern Authors Section (Previous Years). Literature & Authors Section (Previous Years). Folk Literature Section Language & Dialects Analysis | Previous Years Analysis (Dances) | PYQ Analysis (Performing Arts) | Previous Year Questions (Art and Culture) | Question Bank (Culture of Marwar) |

wincompete